Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2023-25
www.dainikvishwapariwar.com
रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 71 ● वर्ष : 14 ● रायपुर, गुरुवार 17 सितम्बर 2026 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जैन धर्म का मूल विस्तार यह है कि वह प्रत्येक आत्माओं को परमात्मा बनाने की क्षमता को बताता है।

The fundamental of jainism is that it explains every soul's capability to become god.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

झीरम घाटी में नक्सली हमले के 10 दोषियों को मृत्युदंड

■ 2013 में छत्तीसगढ़ कांग्रेस नेताओं के काफिले पर हमला हुआ था, 27 मारे गए थे

रायपुर (विश्व परिवार)। 2013 में झीरम घाटी में कांग्रेस नेताओं समेत 29 लोगों की हत्या के मामले में जगदलपुर एनआईए कोर्ट ने 10 दोषियों को फांसी की सजा सुनाई है। इनमें 2 महिला और 8 पुरुष शामिल हैं। 25 मई 2013 को कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा के काफिले पर नक्सली हमला हुआ था। हृद्ध के मुताबिक इस हमले में कांग्रेस के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष नंदकुमार पटेल, महेंद्र कर्मा और पूर्व केंद्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल समेत 27 लोगों की मौत हुई थी। करीब 13 साल चली सुनवाई में 101 गवाहों के बयान और दस्तावेज दर्ज किए गए। यह सजा हाईकोर्ट के आदेश के बाद ही लागू होगी। तब तक सभी दोषी केंद्रीय जेल जगदलपुर में रहेंगे। 30 दिन के अंदर हाईकोर्ट में अपील कर सकते हैं। अभियोजन पक्ष ने फांसी की मांग की थी, जबकि बचाव पक्ष ने दलील में सजा कम करने की मांग की थी।

दोषी ठहराए गए कोसा के ममेरे भाई ने कहा कि कोसा नक्सली नहीं था। क्या नक्सली गांव में रहते हैं। जिस समय कोसा को पकड़ा गया, वह घर में खाना बना रहा था। मौत की सजा की जानकारी मिली है। वकील ने बताया है कि 30 दिन के अंदर हाईकोर्ट जाना पड़ेगा। वहीं अभियोजन पक्ष के वकील ने परिजनों के आरोपों पर कहा कि कोर्ट आरोपों से नहीं सबूतों से चलती है। एनआईए के दिए दस्तावेजों को कोर्ट ने सही पाया, इसलिए मौत की सजा सुनाई गई है। 101 गवाहों के बयान दर्ज किए गए थे। एफआईआर में और बहुत सारे लोगों के नाम थे। उनमें अज्ञात और नामजद लोग भी हैं। उनकी पहचान की जाएगी। 11 लोग पकड़े गए थे। ट्रायल के दौरान एक की मौत हो गई। 10 लोगों की सजा सुनाई गई है। 13 साल पहले बस्तर में कांग्रेस अपनी परिवर्तन यात्रा निकाल रही थी। 25 मई 2013 की शाम यह यात्रा सुकमा की ओर से लौट रही थी। काफिला जब दरभा क्षेत्र की झीरम घाटी से गुजर रहा था, तभी माओवादियों ने घात लगाकर हमला कर दिया।

एनआईए की जांच बिल्कुल ठीक थी : विजय शर्मा

छत्तीसगढ़ के बहुचर्चित झीरम घाटी नक्सली हमले के मामले में जगदलपुर की विशेष एनआईए अदालत ने सभी 10 दोषियों को मृत्युदंड की सजा सुनाई है। करीब 13 साल पुराने इस मामले में अदालत ने 5 सितंबर 2026 को सभी 10 आरोपियों को दोषी ठहराया था। इसके बाद सजा की अवधि पर सुनवाई पूरी करते हुए बुधवार को अदालत ने सभी दोषियों को फांसी की सजा सुनाई। फैसले के बाद प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री विजय शर्मा ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी है। अदालत के फैसले के बाद प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि एनआईए ने मामले की जांच के आधार पर आरोपियों को दोषी साबित किया और अदालत ने उसी आधार पर फैसला सुनाया है। विजय शर्मा ने कहा, एनआईए की जांच बिल्कुल ठीक थी, तभी तो ऐसा हुआ है। अनावश्यक किसी को आरोपित करना और इस विषय पर राजनीतिक करना, कांग्रेस ने कोशिश की थी। लेकिन एनआईए कोर्ट ने आज दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। उन्होंने कहा कि आज यह स्पष्ट हो गया है कि एनआईए ने पूरे शिद्दत के साथ मामले की जांच की थी। एनआईए कोर्ट के फैसले को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की ओर से असंतुष्टि जताए जाने पर विजय शर्मा ने पलटवार किया। उन्होंने कहा कि भूपेश बघेल की नाराजगी का कोई आधार नहीं है। गृहमंत्री ने कहा कि भूपेश बघेल खुद मुख्यमंत्री रहे हैं और उनके कार्यकाल में भी इस मामले को लेकर सवाल उठते रहे। विजय शर्मा ने बघेल के उस पुराने बयान का जिक्र किया, जिसमें उन्होंने झीरम मामले के सबूत अपनी जेब में होने की बात कही थी।

झीरम घाटी हत्याकांड के दोषियों को मृत्युदंड न्याय की जीत : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने झीरम घाटी हत्याकांड मामले में दोषी पाए गए सभी दस माओवादियों को जगदलपुर एनआईए कोर्ट द्वारा मृत्युदंड की सजा सुनाए जाने को न्याय की जीत बताया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर लिखा है कि झीरम घाटी में हुआ बर्बर हत्याकांड छत्तीसगढ़ के इतिहास का वह पीड़ादायक अध्याय है, जिसकी कटु स्मृतियां हमें लंबे समय तक पीड़ा देती रहेंगी। इस जघन्य कम्युनिस्ट हिंसा में हमने प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं, सुरक्षाकर्मियों और आम नागरिकों को भी खोया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मामले में दोषी पाए गए सभी दस माओवादियों को जगदलपुर एनआईए कोर्ट द्वारा दी गई मृत्युदंड की सजा न्याय की जीत है। एनआईए ने जिस तरह इस जांच को अंजाम तक पहुंचाया, उसकी भी सराहना होनी चाहिए। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के लौह संकल्प और उनके दृढ़ नेतृत्व में हमने सशस्त्र माओवाद के चंगुल से प्रदेश को मुक्त कराया है। दशकों से माओवादी हिंसा झेल रहा बस्तर आज शांति, विश्वास और विकास के नए युग की ओर आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अवसर विशेषकर जनजाति समाज की लाश पर राजनीति करने वालों और आतंक को बौद्धिक एवं वैचारिक समर्थन देने वालों के लिए आत्मचिंतन का भी अवसर है। दिमागी नक्सल भी यह जान लें कि निहित स्वार्थ के कारण किसी भी आतंक को प्रश्रय और आसरा देने का परिणाम सबके लिए विनाशकारी ही होता है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि भारतीय लोकतंत्र और संविधान के विरुद्ध लड़ने वाले आतंक का भस्मासुर किसी विचार या क्षेत्र की सरहद को नहीं मानता है। यह समझकर उन्हें अपनी हरकतों से बाज आना चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री साय ने झीरम घाटी के क्रूर हमले में प्राण गंवाने वाले सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी है।

प्रदेश के ग्रामीण अंचलों तक बैंकिंग नेटवर्क का करें विस्तार

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से राजधानी रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में एचडीएफसी बैंक के प्रतिनिधिमंडल ने सौजन्य मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री को एचडीएफसी बैंक द्वारा छत्तीसगढ़ में अपनी सेवाओं के 25 वर्ष पूर्ण किए जाने की जानकारी दी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस उपलब्धि पर बैंक प्रबंधन, अधिकारियों-कर्मचारियों और ग्राहकों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

विधायक भावना बोहरा ने रखी सरदार पटेल की प्रतिमा की नींव, शेयर धारक किसानों को शक्कर व प्रशस्ति पत्र का किया वितरण

पंडरिया (विश्व परिवार)। विधानसभा अंतर्गत किसानों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए क्षेत्र में कृषि एवं सहकारिता से जुड़े कार्यों को निरंतर गति दी जा रही है। इसी क्रम में लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल सहकारी शक्कर कारखाना मर्यादित,पंडसरिया में आज विधायक भावना बोहरा द्वारा सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया गया। इसके साथ ही कुल 229 गांव के 14853 किसानों को रियायती दर पर 50 किलो शक्कर का वितरण एवं 2946 नए किसान सदस्यों को शेयर का वितरण व प्रमाण पत्र वितरण कर बधाई व शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने कहा कि गन्ना किसान हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। किसानों की मेहनत का उन्हें उचित लाभ मिले, इसके लिए सहकारी शक्कर कारखाने को मजबूत करना और किसानों को प्रोत्साहित करना हमारी प्राथमिकता है। किसानों के हित में किए जा रहे प्रयासों का उद्देश्य केवल वर्तमान जरूरतों को पूरा करना नहीं, बल्कि कृषि को अधिक लाभकारी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना है। किसानों को पूर्ण भुगतान मील इसके लिए हमने निरंतर प्रयास किया और विगत 5 वर्षों की तुलना में इस वर्ष हमने किसानों के बकाया भुगतान की राशि सबसे तेज रिकॉर्ड समय मे पूर्ण राशि का भुगतान किया।

भावना बोहरा ने कहा कि गन्ना किसानों को प्रोत्साहन देने तथा सहकारिता से अधिक से अधिक किसानों को जोड़ने की दिशा में भी निरंतर कार्य किया जा रहा है।माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार और माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार की प्राथमिकता किसान कल्याण और ग्रामीण विकास है। डबल इंजन सरकार की किसान हितैषी नीतियों का लाभ गांव के अंतिम छोर तक पहुंचाने के लिए क्षेत्र में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

भावना बोहरा ने बताया कि लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल सहकारी शक्कर कारखाना मर्यादित, पंडरिया में इस वर्ष किसानों को 40 करोड़ से अधिक की एफआर.पी. राशि का शत प्रतिशत भुगतान 15 जुलाई तक कर दिया गया, जो पिछले 5 वर्षों में सबसे तेज भुगतान है। उन्होंने समस्त शेयर धारक गन्ना किसानों व नए सदस्यों को बधाई देते हुए कहा कि किसानों का हित हमारी प्राथमिकता है। हमारे किसान भाई-बहन पंडरिया विधानसभा की अर्थव्यवस्था और समृद्धि की सबसे मजबूत नींव हैं। हमारा हमेशा से प्रयास रहा है कि हमारे किसानों को उनके परिश्रम का पूरा सम्मान मिले। किसान आर्थिक रूप से मजबूत होगा तभी गांव मजबूत होंगे और गांव मजबूत होंगे तो प्रदेश भी समृद्ध बनेगा। माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार किसानों की आय बढ़ाने, कृषि को लाभकारी बनाने और किसानों को सशक्त बनाने के संकल्प के साथ निरंतर कार्य कर रही है।

इस अवसर पर किसान संघ के उपाध्यक्ष श्री दिनेश चन्द्रवंशी जी, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमति नन्दनी साहू जी, जिला पंचायत सदस्य श्रीमति राजेश्वरी घृतलहरे जी, मंडल अध्यक्ष श्री रविश ठाकुर जी, श्री प्रदीप गोस्वामी जी, श्री फ्लीत साहू जी, श्री बाल मुकुन्द चन्द्रवंशी जी, श्री बालाराम चन्द्रवंशी जी, श्री सुरेश दुबे जी, श्री द्वारिका चन्द्रवंशी जी, श्री शिवनाथ वर्मा जी, श्री शिवकुमार चन्द्रवंशी जी, श्री कल्याण सिंह जी, श्री ओम यदू जी, श्री डीसी चन्द्रवशी जी, श्री मनोज ठाकुर जी, श्री भागीरथी साहू जी, श्री कृष्णा चन्द्राकर जी, श्री विकास पाण्डेय जी, श्री यशपाल छाबड़ा जी, श्री रोशन जैन जी, श्री रमेश गुप्ता जी, श्री राम कुमार चंद्राकर जी, श्री अश्वनी यदु जी, श्री राजकु?मार नेताम जी, श्री भानेश्वर जायसवाल जी सहित भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि, शक्कर कारखाना के अधिकारी व कर्मचारी एवं किसान उपस्थित रहे।

सीआईआई यंग इंडियंस के 'युवा उत्सव 5.0' का रायपुर में सफल समापन

नवाचार और युवा नेतृत्व पर केंद्रित रहा सम्मेलन उप-मुख्यमंत्री अरुण साव ने आधुनिक तकनीक और सक्रिय नेतृत्व पर दिया बल

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय उद्योग परिसंघ की युवा इकाई 'यंग इंडियंस' रायपुर द्वारा आयोजित एक दिवसीय वार्षिक फ्लैगशिप सम्मेलन 'युवा उत्सव 5.0' आज पंडित दीनदयाल उपाध्याय (ष्ठष्ठ) ऑडिटोरियम, रायपुर में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। 'वन भारत स्पिरिट' (हृठ्ठद्द क्षद्धड्डद्बड्ड स्श्चद्बह्म्द्बह्ल) के संकल्प के तहत आयोजित इस सम्मेलन में नीति-निर्माताओं, यूनिकॉर्न संस्थापकों, उद्योगपतियों, निवेशकों और 2000 से अधिक छात्र-छात्राओं व युवाओं ने भाग लेकर नवाचार और उद्यमशीलता पर विचार साझा किए।

समारोह के विशेष समापन सत्र में माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने कहा, ÷जब युवा ऊर्जा और आधुनिक तकनीक का समन्वय होता है, तो समाज की जटिल समस्याओं का समाधान संभव होता है। मैं युवाओं का आह्वान करता हूँ कि वे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी उभरती तकनीकों को अपनाकर छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय और वैश्विक पटल पर स्थापित करें।÷

अतिथियों का स्वागत करते हुए सीआईआई छत्तीसगढ़ राज्य परिषद के अध्यक्ष एवं श्री बजरंग पावर एंड इस्पात लिमिटेड के निदेशक श्री बजरंग गोयल ने कहा कि औद्योगिक प्रतिस्पर्धा के लिए युवाओं को उद्योग की वास्तविक जरूरतों से जोड़ना आवश्यक है। विषय प्रवर्तन करते हुए यंग इंडियंस (ङ्घद्ब) रायपुर के चेयरमैन एवं रामा टीएमटी के निदेशक श्री पंकज सोमानी ने कहा कि 'वी कैन, वी विल' के संकल्प के साथ यह आयोजन युवाओं को पूंजी निवेश, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सफल उद्यम स्थापित करने की प्रेरणा देने के लिए किया गया है।

सम्मेलन के प्रथम सत्र 'द यंग कैपिटलिस्ट' में सुश्री ऐश्वर्या गोयल (संस्थापक, विस्टेरिया मीडिया), श्री अभिनव जैन (एमडी व सीईओ, जिनकुशल इंडस्ट्रीज लिमिटेड), श्री अभिषेक जायसवाल (फंड मैनेजर, फिनएवेन्यू) ने पूंजी प्रबंधन व व्यापार विस्तार पर मार्गदर्शन दिया। इसके पश्चात प्रेरक वक्ता श्री राहुल कपूर ने नेतृत्व क्षमता पर सत्र लिया। दोपहर के सत्र में एआई रेल्म टेक्नोलॉजीज के संस्थापक श्री राउल जॉन अजू ने 'फ्यूचर ऑफ एआई' पर और 'यूनिकॉर्न माइंडसेट' सत्र में श्री अर्जुन वैद्य (संस्थापक, डॉ. वैद्यज), श्री कुशल अग्रवाल (सह-संस्थापक, ज़ोक्सोडे) और सुश्री सृष्टि तनवानी (सह-संस्थापक एवं सीईओ, इंडो एरा) ने स्टार्टअप्स के विस्तार पर अनुभव साझा किए। समारोह के समापन चरण में यंग इंडियंस (ङ्घद्ब) रायपुर के को-चेयर एवं पासरी रिफ्रैक्टरीज के निदेशक श्री कवित पसारी ने दिन भर चले विचार-विमर्श पर सारगर्भित निष्कर्ष प्रस्तुत किए। इसके उपरांत श्री आदित्य अग्रवाल, को-चेयर, (ङ्घद्ब ङ्घह्व1ड्ड 1द्गह्व्ह्वद्बष्ड्डह्य) द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में चलाया जाएगा 2 अक्टूबर तक 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान

बिलासपुर (विश्व परिवार)। रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर मंडल में 'स्वच्छता ही सेवा-2026' अभियान का आयोजन 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर 2026 तक ÷स्वच्छता में सहभाग, स्वच्छ भारत, विकसित भारत÷ की थीम पर किया जा रहा है। इसके पश्चात स्वच्छता पखवाड़ा 01 से 15 अक्टूबर 2026 तक आयोजित होगा। इस अवधि के दौरान विभिन्न स्वच्छता, जनजागरूकता एवं जनभागीदारी आधारित कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। अभियान का उद्देश्य रेलवे परिसरों को स्वच्छ बनाने के साथ-साथ स्वच्छता को जन-आंदोलन का रूप देना, नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करना, कचरे के उचित प्रबंधन एवं पृथक्करण को बढ़ावा देना तथा स्वच्छ एवं स्वस्थ रेलवे परिवेश तैयार करना है।अभियान के दौरान दिनाँक 17 एवं 18 सितम्बर 2026 को रेलवे स्कूलों एवं कॉलोनियों में विद्यार्थियों एवं युवाओं को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, कचरा पृथक्करण, जल संरक्षण एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जाएगा। विद्यार्थियों के लिए रेलवे की स्वच्छता एवं अपशिष्ट प्रबंधन सुविधाओं का भ्रमण, संवाद, वाद-विवाद, चित्रकारी प्रतियोगिता एवं नुक्कड़ नाटक जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।दिनाँक 19 एवं 20 सितम्बर 2026 को कचरा संवेदनशील स्थलों एवं क्लीन्लिनेस टारगेट यूनिट्स (सीटीयूस) की विशेष सफाई कर उनका सौंदर्यीकरण का कार्य किया जाएगा। साथ ही सामाजिक संगठनों एवं स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी।

दिनाँक 21 एवं 22 सितम्बर 2026 को ÷स्वच्छ स्टेशनङ्कस्वच्छ रेलगाड़ी एवं स्वच्छ सार्वजनिक स्थान÷ अभियान के अंतर्गत स्टेशनों एवं चयनित ट्रेनों में विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। ट्रेनों में शौचालय, कोच की स्वच्छता, लिनेन तथा ऑनबोर्ड हाउस कीपिंग (ओबीएचएस) एवं पैन्ट्रीकार की स्वच्छता का निरीक्षण किया जाएगा। स्टेशनों पर सूखे एवं गीले कचरे के लिए अलग-अलग डस्टबिन तथा प्लास्टिक मुक्त प्लेटफॉर्म को बढ़ावा दिया जाएगा।दिनाँक 23 एवं 24 सितम्बर 2026 को जनभागीदारी के तहत रेलवे कॉलोनियों में घर-घर जागरूकता अभियान, होम कोंपोस्टिंग एवं बायो-कोंपोस्ट के प्रति जागरूकता, सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को हतोत्साहित करने तथा कपड़े के थैलों के उपयोग को बढ़ावा देने जैसे कार्यक्रम होंगे। साथ ही जीरो-वेस्ट खेल प्रतियोगिताएं तथा ÷नेकी की दीवार÷ एवं आरआरआर संग्रह केंद्रों के माध्यम से पुनः उपयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा।दिनाँक 25 एवं 26 सितम्बर 2026 को जीरो-वेस्ट थीम पर स्काउट

अनाधिकृत वेंडरों के विरुद्ध रेल मंडल की सघन जांच एवं कार्रवाई

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर रेल मंडल द्वारा यात्रियों को सुरक्षित, गुणवत्तापूर्ण एवं अधिकृत खानपान सामग्री उपलब्ध कराने तथा रेलवे परिसर में अनाधिकृत गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण के उद्देश्य से अनाधिकृत वेंडरों के विरुद्ध सघन जांच अभियान चलाया जा रहा है। अधिकृत वेंडरों के माध्यम से गाडियों तथा स्टेशनों में गुणवत्तायुक्त खानपान की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। स्टेशनों एवं गाडियों में यात्रियों को उपलब्ध कराई गई खानपान की गुणवत्ता को बरकरार रखने तथा उसमें लगातार सुधार हेतु प्रतिबद्धता के साथ कार्य किया जा रहा है। रायपुर रेल मंडल के प्रमुख रेलवे स्टेशनों एवं ट्रेनों में वाणिज्य विभाग तथा रेलवे सुरक्षा बल के सहयोग से जांच की जा रही है। इस दौरान ऐसे व्यक्तियों की पहचान की जा रही है जो बिना वैध अनुमति/लाइसेंस के स्टेशन परिसर अथवा ट्रेनों में खाद्य सामग्री, पेय पदार्थ एवं अन्य यात्रियों की उपयोगी वस्तुओं की बिक्री करते पाए जाते हैं। रेलवे प्रशासन द्वारा स्पष्ट किया गया है कि केवल अधिकृत एवं वैध लाइसेंसधारी वेंडरों को ही रेलवे परिसर एवं ट्रेनों में निर्धारित नियमों के अनुसार बिक्री की अनुमति है। अनाधिकृत रूप से खाद्य सामग्री अथवा अन्य वस्तुओं की बिक्री करने वालों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है।

रेलवे स्टेशनों एवं ट्रेनों में अनाधिकृत वेंडिंग को रोकने के लिए रायपुर रेल मंडल के वाणिज्य विभाग द्वारा समय-समय पर 08 चेकिंग ड्राइव ट्रेनों एवं रेलवे स्टेशनों पर चलाई गई। जांच दल द्वारा संदिग्ध गतिविधियों पर विशेष नजर रखी जा रही है। पकड़े जाने पर संबंधित व्यक्ति के विरुद्ध रेलवे के प्रचलित नियमों के तहत आवश्यक कार्रवाई की जाती है। रायपुर मंडल क्षेत्राधिकार में अवैध हॉकर / वेंडर वाली गतिविधियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई निरंतर जारी है। इसी क्रम में रायपुर मंडल में वर्ष 2026 में माह सितम्बर दिनांक 15.09.2026 तक अवैध वेण्डरो के विरूद्ध कुल 2268 मामले दर्ज किया गया है।स्टेशन परिसर एवं ट्रेनों में नियमित / औचक चेकिंग तथा गश्त करने के साथ-साथ वाणिज्य विभाग, आरपीएफ, रेलवे प्रशासन एवं अन्य संबंधित विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर संयुक्त कार्रवाई की जा रही है। रेलवे परिसर एवं ट्रेनों में अवैध ब्रिकी एवं खराब गुणवत्ता वाले नाश्ता उचे दामों में परोसे जाने जैसी गतिविधियों को रेसुब प्रभारी रायपुर द्वारा वाणिज्य विभाग एवं खाद्य निरीक्षक के संज्ञान में लाते हुए नियमानुसार कार्यवाही हेतु समन्वय किया गया है। इसके साथ ही ऐसी गतिविधियों की शिकायत करने हेतु यात्रियों को जागरूक किया जा रहा है। रायपुर रेल मंडल ने यात्रियों से अपील की है कि वे अनाधिकृत वेंडरों से खाद्य सामग्री या अन्य सामान न खरीदें। खानपान सामग्री केवल अधिकृत स्टॉल, काउंटर या लाइसेंसधारी वेंडरों से ही खरीदें। यदि कोई व्यक्ति बिना अधिकृत पहचान/लाइसेंस के ट्रेन या स्टेशन परिसर में सामान बेचता हुआ।

धरसींवा में खुला नया उप पंजीयक कार्यालय, विधायक अनुज शर्मा के प्रयासों से क्षेत्रवासियों की वर्षों पुरानी मांग पूरी

धरसींवा (विश्व परिवार)। क्षेत्रवासियों की वर्षों पुरानी और बहुप्रतीक्षित मांग को पूरा करते हुए धरसींवा विधायक अनुज शर्मा ने आज धरसींवा में नवस्वीकृत उप पंजीयक कार्यालय का औपचारिक शुभारंभ किया। इस नए कार्यालय के प्रारंभ होने से क्षेत्र के लगभग 60 गांवों के ग्रामीणों, किसानों और जमीन खरीदार-बिक्रेताओं को सीधा लाभ मिलेगा।

अब तक धरसींवा क्षेत्र के निवासियों को भूमि रजिस्ट्री, नामांतरण और अन्य राजस्व व रजिस्ट्रेशन संबंधी कार्यों के लिए राजधानी रायपुर के चक्कर काटने पड़ते थे। इससे स्थानीय जनता के

समय और धन दोनों का काफी अपव्यय होता था। धरसींवा में ही उप पंजीयक कार्यालय की शुरुआत होने से अब क्षेत्रवासियों को रायपुर की इस अनिवार्य दौड़ से पूरी तरह राहत मिल गई है।

इस ऐतिहासिक अवसर पर क्षेत्रवासियों को बधाई देते हुए विधायक अनुज शर्मा ने कहा, ÷आज का दिन हमारी धरसींवा विधानसभा के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज होने जा रहा है। हमारे ग्रामीणों की वर्षों पुरानी समस्याएं आज समाप्त हो रही हैं। यह सिर्फ एक सरकारी दफ्तर का उद्घाटन नहीं है, बल्कि हमारे लगभग 60 गांवों के हजारों परिवारों के सम्मान, सुविधा और सुशासन का नया सवेरा है।÷

विधायक ने आगे कहा, ÷हमारे क्षेत्र के किसान भाइयों, बुजुर्गों और आम नागरिकों को अपनी ही ज़मीन-जायदाद के छोटे-छोटे पंजीयन कार्यों व दस्तावेजों की रजिस्ट्री के लिए बार-बार रायपुर जाना पड़ता था। भीषण गर्मी, बरसात और ठंड के मौसम में धक्के खाने की मजबूरी, समय की बर्बादी और पैसों का अनावश्यक खर्च अब हमेशा के लिए खत्म हो गया है। अब हमारे ग्रामीण भाइयों को किसी भी रजिस्ट्री या शासकीय प्रक्रिया के लिए रायपुर की दौड़ नहीं लगानी पड़ेगी।

पीएम के जन्मदिन पर जलेगा 'आशीर्वाद का दीया': तोमन साहू

बालोद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर के अवसर पर बालोद जिले में 'आशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिला पंचायत बालोद के उपाध्यक्ष तोमन साहू ने जिलेवासियों, जनप्रतिनिधियों एवं विभिन्न शासकीय योजनाओं के हितग्राहियों से 17 सितंबर की शाम अपने-अपने घरों, आंगनों एवं निर्धारित सार्वजनिक स्थलों पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम में सहभागिता की अपील की है।

निधन समाचार

ग्राम सारागांव खरोरा निवासी कमला (चंद्रलेखा)पाण्डेय उम्र (74 वर्ष) का निधन कल हो गया है। वे श्री जनकलाल पाण्डेय जी की धर्मपत्नी एवं देवी प्रसाद पाण्डेय जी की माता थी उनकी अंतिम यात्रा आज दिनांक 17-09-2026 को सुबह 10 निवास स्थान से सारागांव मुक्तिधाम के लिए निकलेगी ।। मोबाइल नंबर - 7354557955

भाजपा के राज में ढाई साल में सड़के बदहाल हो गयी :कांग्रेस

रायपुर (विश्व परिवार)। पूरे प्रदेश में सड़कों की बदहाल स्थिति के लिए भाजपा की सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता सुरेन्द्र वर्मा ने कहा है कि सड़कों को प्रदेश के विकास की धमनी कहा जाता है, सरकार नई सड़के तो बना नहीं पा रही, पुराने सड़कों की मरम्मत जो नियमित प्रक्रिया है, वह भी पूरी तरह बंद है। छत्तीसगढ़ में साय सरकार का आधे से अधिक कार्यकाल गुजर चुका है लेकिन अभी तक केवल मंजूरी और स्वीकृति के फर्जी दावे से आगे नहीं बढ़ पाए हैं। भाजपा के कुशासन में केवल भ्रष्टाचार का ही विकास हुआ है, सड़कों रखरखाव के जिम्मेदार अधिकारी मंत्रियों के परिजनों की तेरही के बंदोबस्त में रहे, आम जनता टैक्स चुकाकर भी मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रही है। भाजपा के कुशासन में भ्रष्टाचार ही विकास है। शहरों से लेकर गांव सड़कों के गड्ढे तालाब बन चुके, नए पुल-पुलियों के स्लैब गिर रहे।प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता सुरेन्द्र वर्मा ने कहा है कि विगत ढ़ाई साल में हजारों करोड़ पीडब्लूडी को बजट आबंटन किया गया जब सड़के बदहाल हैं तो यह राशि आखिर गई कहां? जो भी नए सड़क पुल पुलिया बने भी वे उद्घाटन से पहले या ठीक बाद ही जर्जर हो गए। पीडब्लूडी मंत्री के गृह जिले मुंगेली जिले के अमर टापू धाम में करीब साढ़े चार करोड़ रुपये की लागत से बन रहे पुल का स्लैब पहली ही ढलाई में गिर गया, निर्माण गुणवत्ता और विभागीय निगरानी, और भ्रष्टाचार की कलई खुल गई है। यह सरकार केवल कमीशनखोरी में मस्त है। निर्माण में घटिया सामग्री, तकनीकी लापरवाही और ठेकेदारों से अनुचित वसूली की वजह से ही यह हादसा हुआ। गरियाबंद जिले में कोसुमबूड़ा पुल तेज बहाव में टूट गया, जिससे दस से ज्यादा गांवों का संपर्क मुख्यालय से कट गया। अब ग्रामीणों को अस्पताल, स्कूल, बाजार और बैंक तक पहुंचने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सूरजपुर जिले के सुखदेवपुर नाला में टूटी पुलिया और अधूरे रपटा की वजह से स्कूली बच्चों, महिलाओं और किसानों को रोज जान जोखिम में डालकर उफनता नाला पार करना पड़ रहा है। परिजन बच्चों को कंधे पर बैठाकर स्कूल पहुंचा रहे हैं, जबकि किसान ट्रैक्टर और मवेशियों के साथ बड़ी मुश्किल से आवाजाही कर रहे हैं। पामगढ़, रायगढ़, कवर्धा, मुंगेली सहित प्रदेश की जनता सड़कों में गड्ढो पर भरे पानी में नहाते हुए वीडियो बनाकर इस सरकार की नाकामी को उजागर कर रही है। प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता सुरेन्द्र वर्मा ने कहा है कि छत्तीसगढ़ में लोक निर्माण विभाग, नगरीय निकाय विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, पीएचई विभाग के भ्रष्टाचार एक के बाद एक उजागर हो रहे हैं। विगत दिनों लोक निर्माण विभाग के 50 लाख के टेंडर में अपने चहेते अपात्र ठेकेदार को लाभ पहुंचाने के लिए इरादतन दस्तावेजों में हेरफेर की गई, जरूरी रजिस्ट्रेशन और इलेक्ट्रिकल लाइसेंस की अनिवार्यता से

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
निविदा सूचना

(1) निविदा सूचना क्रमांकः- एसएनटी-आर-2026-14, दिनांकः 15.09.2026

कार्य का नामः रायपुर डिवीजन में इंजीनियरिंग मशीन के काम के दौरान सिग्नल और दूरसंचार कार्यों के लिए मानव संसाधन की आउटसोर्सिंग। **निविदा मूल्यः रू. 14116740.00, ईएमडीः रू. 220600.00, कार्य पूर्णता की अवधिः 24** (चौबीस) माह । बिडर्स अपना मूल/संशोधित बिड्स केवल **12.10.2026 को 15.00 बजे तक** प्रस्तुत कर सकते है । मैनुअल ऑफर्स इस निविदा के विरुद्ध स्वीकार नहीं होंगे ।

विस्तृत विवरण हमारे वेबसाईट **www.ireps.gov.in.** पर उपलब्ध है ।

मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियंता
द.पू.म.रे., रायपुर

पीआर/आर/एसएनटी/एन/208

South East Central Railway @secrail

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./35182/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2026
रायपुर, दिनांक 11-09-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 35182
वार्ड का नाम- 16 वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107I00760** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHIVKUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JHAGRU RAM** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **PARDESHI RAM SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O BHGAU SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **01.MALMA VIKRAYA IKARARNAMA 02. SHAPAT PATRA 03. TAX RASHI KE AADHAR PAR** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अंशुल शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./35307/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2026
रायपुर, दिनांक 11-09-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 35307
वार्ड का नाम-15- कन्हैया लाल बाजारी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड15 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108F00234** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ASHOK SAO** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANI SAO** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MEENA DEVI MAHARAJ** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O AMIT KUMAR MAHARAJ** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अंशुल शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कालोनी बीरगांव रायपुर में निर्मित बी-टाईप योजना में से भवन क्र. बी.-55, भू-तल **M/S HARSHAD THERMIC INDUSTRIES PVT. LIMITED RAIPUR** को भाड़ाक्रय आधार पर आबंटित किया गया है। उनके द्वारा **दिनांक 25.03.2004** को विक्रय विलेख पंजीकृत करा लिया गया है।

तद्उपरांत **PANDROL WELDING & EQUIPENT INDIA PVT. LIMITED** के मैनेजिंग डायरेक्टर (**अधिकृत श्री पी. अभिनव रेड्डी**) द्वारा उक्त भवन **PANDROL WELDING & EQUIPENT INDIA PVT. LIMITED** के नाम पर नामांतरण करने हेतु आवेदन पत्र, विक्रय विलेख की छायाप्रति, छत्तीसगढ़ शासन के राजपत्र में **M/S HARSHAD THERMIC INDUSTRIES PVT. LIMITED RAIPUR** के नाम के स्थान पर नया नाम **PANDROL WELDING & EQUIPENT INDIA PVT. LIMITED** के नाम से परिवर्तन किये जाने का प्रमाण पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन **PANDROL WELDING & EQUIPENT INDIA PVT. LIMITED** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय / वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के नामांतरण के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अन्दर स्वतः उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी, एवं भवन का नामांतरण आदेश जारी कर दिया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-7)
मंगलम काम्प्लेक्स अग्रसेन चौक, रायपुर
E-mail ID - rmczone7@gmail.com

पत्र क्र./35386/ न.पा.नि./जोन क्र.-7/2026
रायपुर, दिनांक 16-09-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 35386
वार्ड का नाम-25- संत रामदास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 25 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR818F00087** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHANTA BAI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE SANTOSH SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **TILAK RAJA SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **श्री फुलचंद साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
डॉ. तृप्ति पाणिग्रही
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-7
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, गुरूवार 17 सितंबर 2026

भैयाथान क्षेत्र में 34 करोड़ से अधिक के सड़क विकास कार्यों की मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने दी सौगात

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने भैयाथान क्षेत्रवासियों को सड़क विकास की बड़ी सौगात देते हुए 34 करोड़ 15 लाख रुपये से अधिक की लागत वाले दो महत्वपूर्ण सड़क निर्माण एवं उन्नयन कार्यों का कार्यप्रारम्भ पूजन किया। इन परियोजनाओं के पूर्ण होने से ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन सुगम होने के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, बाजार और अन्य आवश्यक सेवाओं तक लोगों की पहुंच बेहतर होगी तथा क्षेत्र में विकास की गति को नई दिशा मिलेगी।

मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि सड़कें विकास की जीवन रेखा हैं। मजबूत और बेहतर सड़क नेटवर्क से गांवों की कनेक्टिविटी बढ़ती है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है। सरकार का प्रयास है कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण अधोसंरचना पहुंचे और लोगों को आवागमन की बेहतर सुविधाएं मिलें। उन्होंने कहा कि इन सड़क परियोजनाओं का लाभ किसानों, विद्यार्थियों, व्यापारियों सहित आम नागरिकों को मिलेगा।

उन्होंने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों और निर्माण एजेंसियों को निर्देश दिए कि सभी कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं। निर्माण कार्यों में गुणवत्ता के मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करते हुए उन्होंने कहा कि मजबूत और टिकाऊ अधोसंरचना ही विकास कार्यों का स्थायी लाभ लोगों तक पहुंचा सकती है।

राष्ट्रीय राजमार्ग-43 से केंवरा तक 18 किलोमीटर सड़क का होगा चौड़ीकरण- कार्यप्रारम्भ पूजन किए गए प्रमुख कार्यों में डुमरिया राष्ट्रीय राजमार्ग-43 से केंवरा मार्ग का चौड़ीकरण एवं उन्नयन शामिल है। लगभग 30.41 करोड़ रुपये की लागत से 18 किलोमीटर लंबे मार्ग का चौड़ीकरण किया जाएगा। परियोजना के अंतर्गत बिटुमिनस कंक्रीट एवं शोल्डर कार्य के साथ 6,570 मीटर नाली, 300 मीटर टो-वॉल, 140 मीटर रिटेनिंग वॉल, 8 एचपीसी तथा 7 स्लैब पुलियों का निर्माण किया जाएगा। सड़क के उन्नयन से राष्ट्रीय राजमार्ग-43 से जुड़े ग्रामीण क्षेत्रों की कनेक्टिविटी और आवागमन सुविधा बेहतर होगी।

दर्रीपारा-दनौली मार्ग से झम्मनपारा को मिलेगी बेहतर कनेक्टिविटी- इसी क्रम में झम्मनपारा में दर्रीपारा से दनौली तक 3.20 किलोमीटर सड़क निर्माण कार्य का भी कार्यप्रारम्भ पूजन किया गया। इस कार्य के लिए 374.76 लाख रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। परियोजना में 3.20 किलोमीटर सड़क, 0.90 किलोमीटर सीसी रोड, 1,200 मीटर नाली, 90 मीटर रिटेनिंग वॉल तथा 6 एचपीसी पुलियों का निर्माण किया जाएगा। इससे स्थानीय ग्रामीणों को बेहतर आवागमन सुविधा मिलने के साथ क्षेत्र के विकास को गति मिलेगी।

मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने सेवा संकल्प अभियान से जुड़ने की अपील की

कार्यक्रम के दौरान मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने क्षेत्रवासियों से सेवा संकल्प अभियान से सक्रिय रूप से जुड़ने की अपील की। उन्होंने बताया कि 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक आयोजित होने वाले इस अभियान का उद्देश्य सेवा, जनभागीदारी और जनकल्याण की भावना को मजबूत करना है। उन्होंने नागरिकों, जनप्रतिनिधियों, युवाओं, महिलाओं एवं सामाजिक संगठनों से अभियान में बढ़-चढ़कर सहभागिता निभाने का आह्वान करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयासों से सेवा और जनकल्याण के कार्यों को नई गति दी जा सकती है।

संक्षिप्त समाचार

हिंदी दिवस पर महाविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-शासकीय नवीन महाविद्यालय चांदनी बिहारपुर मे हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के अतिरिक्त प्रभारी प्राचार्य रंजीत कुमार सातपुते के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस दौरान प्राध्यापकों द्वारा हिन्दी दिवस के महत्व के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी साझा कि गई। सभी छात्र-छात्राओं को आपस में खडी हिंदी में बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। हिन्दी शिक्षक के द्वारा हिंदी भाषा के संदर्भ में हिंदी के प्रारंभ से लेकर अभी वर्तमान दशा एवं दिशा के बारे में ऐतिहासिक विषयों के बारे में चर्चा की गयी। इस दौरान प्राध्यापकों ने हिंदी दिवस के अवसर पर अपने विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

त्यौहारों के मद्देनजर सूरजपुर पुलिस का सघन चेकिंग अभियान,निगरानी व गुण्डा बदमाशों के ठिकानों पर छापा

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-त्यौहारों के दौरान जिले में शांति व्यवस्था एवं सुरक्षा प्रबंध को पुख्ता बनाए रखने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक सूरजपुर श्री योगेश कुमार पटेल (भापुसे) ने जिले के सभी थाना-चौकी प्रभारियों को अपने-अपने क्षेत्र में निवासरत निगरानी एवं गुण्डा बदमाशों की सघन चेकिंग करने के निर्देश दिए हैं।

निर्देश के परिपालन में विगत दो दिनों से जिले के सभी थाना-चौकी प्रभारियों के नेतृत्व में पुलिस अधिकारियों एवं जवानों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में निगरानी एवं गुण्डा बदमाशों की व्यापक स्तर पर चेकिंग की गई। पुलिस टीमों ने उनके निवास स्थान सहित रहने के संभावित अन्य ठिकानों पर दबिश देकर उनकी मौजूदगी की जांच की।

चेकिंग अभियान के दौरान संबंधित व्यक्तियों के वर्तमान गतिविधियों, आवागमन एवं गुजर-बसर के साधनों की जानकारी ली गई। साथ ही उन्हें कानून एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा किसी भी प्रकार की आपराधिक गतिविधि में संलिप्त नहीं होने के संबंध में सख्त हिदायत दी गई।

पुलिस अधीक्षक सूरजपुर ने स्पष्ट किया है कि त्यौहारों को शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित वातावरण में संपन्न कराने के लिए पुलिस द्वारा लगातार क्षेत्र में निगरानी रखी जा रही है। कानून-व्यवस्था प्रभावित करने वाले तत्वों पर विशेष नजर रखते हुए आवश्यकतानुसार वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने सख्त लहजे में कहा है कि निगरानी और गुण्डा बदमाश अपराध से दूरी बनाकर रखे अन्यथा उनके विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

आशीर्वाद का दीया कार्यक्रम में ग्राम से लेकर शहर तक होगी सामुदायिक सहभागिता

बिश्रामपुर के मुख्य मार्ग एवं गली चौक चौराहा दीपों से जगमगाएगा- रितेश जायसवाल

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जिले में आशीर्वाद का दीया कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए व्यापक तैयारियां की गई हैं। मुनादी के माध्यम से भी जन-जन को सूचना प्रसारित को गई है ताकि अधिक से अधिक संख्या में लोग शामिल हो सकें। कार्यक्रम में अधिक से अधिक नागरिकों की सहभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रशासन द्वारा दीपों की व्यवस्था की गई। साथ ही जनप्रतिनिधियों के द्वारा भी दिया वितरण किया गया है।

प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मरावी द्वारा स्व-सहायता समूह की दीदियों एवं हितग्राहियों को दीप वितरित किया गया। इस दौरान उन्हें आशीर्वाद का दीया कार्यक्रम के उद्देश्य एवं आयोजन की जानकारी दी गयी तथा कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक सहभागिता की अपील की गई। ताकि अभियान का संदेश अधिक से अधिक परिवारों तक पहुंच सके। सेवा संकल्प अभियान के तहत आगामी आशीर्वाद का दीया कार्यक्रम को जनभागीदारी का स्वरूप देने जनपद स्तर पर दीपों की व्यवस्था कर वितरण सुनिश्चित किया गया है।

शिवनंदनपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष रितेश जायसवाल ने बताया कि शिवनंदनपुर के मुख्य मार्ग की दोनों तरफ दुकानों के सामने एवं नगर की विभिन्न चौक चौराहा विभिन्न मार्गो गलियों में प्रज्वलित होंगे हजारों दीपक जिससे पूरा नगर जगमगा उठेगा इसके लिए सभी व्यवस्थाएं पूर्ण कर ली गई है।

Samsung Certified Re-Newed ने Galaxy S26 Series को और अधिक ग्राहकों तक पहुँचाया

रायपुर। Samsung India अब Gala&y Sw{ series को अपने Samsung Certified Re-Newed प्रोग्राम (CRN) के तहत उपलब्ध करा रहा है। Samsung की तीसरी पीढ़ी के AI फोन्स के रूप में, Certified Re-Newed Galaxy S26 Ultra और Galaxy S26 Samsung.com पर उपलब्ध हैं। ये डिवाइस नए जैसे हैं और बेहतरीन मूल्य पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

Galaxy S26 series को अपनी Certified Re-Newed लाइन-अप में शामिल करके Samsung अब अधिक ग्राहकों को अपने नवीनतम फ्लैगशिप इनोवेशन का अनुभव करने का अवसर दे रहा है। Gala&y S26 Ultra में Galaxy S series डिवाइस पर अब तक का सबसे शक्तिशाली हार्डवेयर, इंडस्ट्री-लीडिंग कैमरा सिस्टम और सबसे सहज, प्रोएक्टिव तथा अनुकूलनशील Galaxy AI अनुभव मौजूद हैं। इसमें बिल्ट-इन Privacy Display भी पेश किया गया है, जो उपयोगकर्ता के लिए कंटेंट को स्पष्ट रखता है, जबकि आसपास मौजूद अन्य लोगों की नजर से इसे सीमित करता है।

पूरी लाइन-अप में, Galaxy S26 Ultra और Galaxy S26 जटिल कार्यों को बैकग्राउंड में संभालते हैं, जिससे उपयोगकर्ता परिणामों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, और अधिक ग्राहकों तक सबसे सहज, प्रोएक्टिव तथा अनुकूलनशील Galaxy AI अनुभव पहुँचाते हैं। हर Certified Re-Newed Galaxy डिवाइस की Samsung-प्रमाणित रिन्यूअल प्रक्रिया के तहत जाँच, सफाई, रिफर्बिशमेंट और परीक्षण किया जाता है, ताकि वह गुणवत्ता, प्रदर्शन और विश्वसनीयता के Samsung के मानकों को पूरा करे। जहाँ आवश्यक होता है, वहाँ पार्ट्स को असली Samsung पार्ट्स से बदला जाता है और प्रत्येक डिवाइस में Samsung-प्रमाणित बैटरी शामिल होती है।

टाटा प्ले ने बिग बॉस के सीजन लगातार उपलब्ध कराने के लिए रियलिटी टीवी चैनल पेश किया

टाटा प्ले ने टाटा प्ले रियलिटी टीवी लॉन्च किया है। यह सेवा 24×7 निशुल्क उपलब्ध होगी और हिंदी रियलिटी टेलीविजन के सबसे लोकप्रिय शो पेश करेगी। दर्शकों के बीच बिना कथानक वाले रियलिटी शो की लोकप्रियता को देखते हुए टाटा प्ले ने अपनी पेशकशों में रियलिटी टीवी को शामिल किया है ताकि दर्शक विभिन्न श्रेणियों, प्रारूपों और अनुभवों वाले अलग-अलग शो देख सकें। यह सेवा शेमारू एंटरटेनमेंट के साथ साझेदारी में शुरू की गई है, जिसकी शुरुआत बिग बॉस के दो सीजन के साथ हुई है। आने वाले समय में इस पर और ज्यादा शो दिखाए जाएंगे। टाटा प्ले रियलिटी टीवी पर दर्शक रियलिटी टीवी की उन महत्वपूर्ण हस्तियों, टकरावों, दोस्तियों, भावनात्मक सफर और सांस्कृतिक पलों को देख सकेंगे, जो अपने पहले प्रसारण के काफी बाद भी चर्चाओं में शामिल रहे हैं। यह चैनल बिग बॉस के दो अलग-अलग सीजन के साथ शुरू हुआ है। पहला सीजन 2006-07 में आया था, जिसके साथ इस सफल रियलिटी शो की शुरुआत हुई थी। इसमें दर्शकों को पहली बार मशहूर हस्तियों को एक साथ लगातार निगरानी में रहते हुए देखने का अवसर मिला था। इसकी मेजबानी अरशद वारसी ने की थी और इसके विजेता राहुल रॉय थे। इसमें राहुल रॉय, रवि किशन और राखी सावंत जैसे प्रतियोगी थे, जिनके व्यक्तित्वों और बातचीत ने इस शो के सबसे शुरुआती पलों को यादगार बना दिया। इसके साथ लोकप्रिय सीजन 11 भी पेश किया जा रहा है, जो साल 2017-18 में आया था। इसके मेजबान सलमान खान थे और इसकी विजेता शिल्पा शिंदे थीं। यह सीजन लोकप्रिय हस्तियों, जबरदस्त टकरावों, भावनात्मक क्षणों और बहुत ही दिलचस्प कामों पर आधारित चुनौतियों के लिए याद किया गया। शिल्पा शिंदे और हिना खान का सफर और उनके संबंध शो के इतिहास में सबसे अधिक चर्चा में रहे। यह पूरे देश में काफी सुर्खियों में रहा।

सीमेंस स्कॉलरशिप प्रोग्राम के 14वें संस्करण के लिए आवेदन शुरू

सीमेंस लिमिटेड ने सीमेंस स्कॉलरशिप प्रोग्राम के 14वें संस्करण की शुरुआत करते हुए योग्य और मेधावी इंजीनियरिंग छात्रों से आवेदन आमंत्रित किए हैं। जर्मन ड्यूअल एजुकेशन मॉडल पर आधारित यह पाठ्यक्रम छात्रों को इंडस्ट्री की जरूरतों के अनुरूप तैयार करने के साथ उन्हें इंजीनियरिंग, रिसर्च एंड डेवलपमेंट (आरएंडडी) और मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में बेहतर करियर बनाने में मदद करता है। इस कार्यक्रम के जरिए सीमेंस तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने और अपनी तकनीकी विशेषज्ञता, इनोवेटिव टेक्नोलॉजी और अनुभव का इस्तेमाल कर समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में काम कर रहा है। इस पहल के तहत सीमेंस ऐसे मेधावी छात्रों को आर्थिक सहायता देगा, जिनके पास अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई जारी रखने के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधन नहीं हैं। इसके साथ ही छात्रों को इंडस्ट्री के कामकाज और उसकी जरूरतों को समझने का अवसर दिया जाएगा, जिससे उनके समग्र विकास में मदद मिलेगी। यह स्कॉलरशिप इंजीनियरिंग की पूरी चार साल की पढ़ाई के दौरान उपलब्ध होगी।

सरगुजा ज्ञानोदय एसोसिएशन के वॉलिंटियर्स और वी.एम. कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग की छात्राओं को जिला प्रशासन व इम्पैक्ट इंडिया फाउंडेशन ने किया सम्मानित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) बिश्रामपुर रेलवे स्टेशन पर जिला प्रशासन सूरजपुर के मार्गदर्शन में एवं इम्पैक्ट इण्डिया फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दुनिया की पहली हॉस्पीटल ट्रेनं लाईफलाईन एक्सप्रेस के 256 वें शिविर का सफल समापन हो गया है। इस एतिहासिक शिविर में दिन-रात समर्पित होकर मरीजों की सेवा करने वाली वी.एम. कालेज ऑफ नर्सिंग की छात्राओं और सरगुजा ज्ञानोदय एसोसिएशन के वॉलिंटियर्स को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिये जिला प्रशासन सूरजपुर एवं इम्पैक्ट इण्डिया फाउण्डेशन द्वारा उनके उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया और विशेष प्रशस्ति पत्र दिये गये हैं, जिनका वितरण वी.एम. कालेज ऑफ नर्सिंग के संचालक विजयराज अग्रवाल द्वारा छात्राओं को किया गया । प्रशस्ति पत्र वितरण समारोह के मुख्य अतिथि विजयराज अग्रवाल ने नर्सिंग कालेज की छात्राओं और सरगुजा ज्ञानोदय एसोसिएशन के वॉलिंटियर्स के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि शिविर के दौरान मोतियाबिंद, कान की सर्जरी, दंत चिकित्सा, बच्चों की अस्थि सुधार, कटे-फटे होंठ, मुड़े पैर और महिला कैंसर सक्रीनिंग जैसे गंभीर विभागों में इन छात्राओं ने फ्रन्टलाईन वॉरियर्स की तरह काम किया है। ग्रामीण क्षेत्रों से आये बुजुर्गों और महिलाओं की देखभाल में इन भावी नर्सों का सेवा भाव अद्वितीय रहा। प्रशस्ति पत्र पाकर नर्सिंग छात्राओं के चेहरे खिल उठे। छात्राओं ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि इतने बड़े और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के चिकित्सा शिविर में देश के नामी विशेषज्ञ डॉक्टरों के साथ काम करना उनके कैरियर का सबसे बड़ा और व्यावहारिक अनुभव रहा। ये सार्टिफिक्रेट उनके भविष्य के चिकित्सा सेवा क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित होगा। गौरतलब है कि 16 अगस्त 2026 से 05 सितम्बर 2026 तक चले इस मेगा हैल्थ कैंप में हजारों मरीजों का: ओपीडी और सैकड़ों मरीजों की जटिल सर्जरी पूरी तरह नि:शुल्क की गई । शिविर बेहद सफल रहा।

पंडो जनजाति की महिलाओं को दी गई घरेलू हिंसा और योजनाओं की विस्तृत जानकारी

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर श्रीमती रेना जमील के निर्देशानुसार जिले में महिला सशक्तिकरण के तहत जागरूकता कार्यक्रम किया गया जिसमे संरक्षण अधिकारी श्रीमती इंदिरा कुमारी तिवारी जेण्डर विशेषज्ञ सलोमी कुजूर एवं वित्तीय साक्षरता समन्वयक विशेषज्ञ फरजाना के द्वारा महिलाए कैसे स्वलबी बने एवं रोजगार के विभिन्न अवसर एवं कृषी के क्षेत्र में कैसे अपने आप को स्वलंबी बनाए आदि के बारे में बताया गया।

इस दौरान मासिक धर्म स्वच्छता एवं बाल विवाह से होने वाले नुकसान और बाल विवाह न करने की सलाह दी गई तथा 1098 पे कॉल करने का भी सुझाव दिया तथा बाल श्रम न कराने एवं सभी बच्चो को पढ़ाने के लिए विशेष जोर दिया। यातायात नियमों की भी जानकारी दी गई।

नोनी सुरक्षा योजना सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना, महतारी वंदन योजना सखी वन स्टॉप सेंटर, घरेलु हिंसा, महिला उत्पीडन, महिला हेल्पलाईन नम्बर 181,112 और महिला कोष सावधि जमा एवं म्युचवल फंड आदि के बारे में जानकारी दी गई, तथा संरक्षण अधिकारी श्रीमती इंदिरा कुमारी तिवारी के द्वारा घरेलु हिंसा, महिला उत्पीड़न, विशेषकर पंडो जनजाति की महिलाओं को बहुत विस्तृत रूप से चर्चा की गई एवं कार्यस्थल पे लैगिंक अपराध किस प्रकार से हो सकते है उनके बारे में विस्तृत जानकारी साझा की गयी। प्रशिक्षण केन्द्र में महिलाओं को सिलाई, बुनाई एवं अन्य व्यवसायिक प्रशिक्षक आदि के बारे में जानकारी दी गई। जिसमे अध्यक्ष श्रीमती ममता राजवाड़े, लेखपाल श्रीमती चम्पा राजवाड़े एवं समूह की समस्त महिलाएँ उपस्थित थी।

महाप्रबंधक डॉ संजय सिंह का पितृ शोक, पिता रामविलास सिंह जी का दु:खद निधन

बिश्रामपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- एस ई सी एल विश्रामपुर क्षेत्र के महाप्रबंधक डॉ संजय सिंह का 90 वर्षीय पिता श्री रामविलास सिंह का पिछले दिनों दु:खद निधन हो गया । रामविलास सिंह जी भोपाल में पुत्र राजेश सिंह के निवास पर अंतिम सांस ली ।वे अपने पीछे तीन पुत्र क्रमश: अजीत सिंह ,डॉ संजय सिंह, सुरेश सिंह एवं पुत्री मंजू सिंह सहित नाती पोता पोती से भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। स्वर्गीय रामविलास सिंह का अग्नि संस्कार भोपाल के सुभाष नगर स्थित मुक्तिधाम में किया गया ।स्वर्गीय रामविलास सिंह मूलत: बिहार प्रांत के औरंगाबाद जिला के बहलोला ग्राम के निवासी थे। मृत्यु उपरांत होने वाले संपूर्ण क्रिया क्रम ग्राम बहलोल में ही 21 सितंबर को किया जाएगा।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर, गुरूवार 17 सितंबर 2026

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

पीएम विश्वकर्मा-पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को मजबूत करना

पीएम विश्वकर्मा योजना अपने शुभारंभ के लगभग तीन वर्ष पूर्ण करने जा रही है और अब तक 30 लाख लाभार्थियों के पंजीकरण का लक्ष्य हासिल कर चुकी है। योजना के अंतर्गत कारीगरों और शिल्पकारों को कौशल प्रशिक्षण, टूलकिट, ऋण सहायता, डिजिटल प्रोत्साहन और बाजार तक पहुंच जैसी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। लाभार्थियों को उद्यम असिस्ट, जीईएम, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों से जोड़कर उनके उत्पादों के लिए नए बाजार उपलब्ध कराए जा रहे हैं। सम्मान, सामर्थ्य और समृद्धि के मूल मंत्र पर आधारित यह योजना गुरु-शिष्य परंपरा और पारंपरिक कौशल को मजबूत करते हुए कारीगरों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों का समर्थन करना- भारत के पारंपरिक कारीगर और शिल्पकार हमारी स्थानीय अर्थव्यवस्था और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनका काम पारंपरिक कौशल, परिवार से मिले ज्ञान और छोटे स्तर के उद्यमों पर आधारित है। इन्हें शुरू से अंत तक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से 17 सितंबर 2023 को पीएम विश्वकर्मा योजना शुरू की गई। पीएम विश्वकर्मा योजना तीन प्रमुख स्तंभों—सम्मान, सामर्थ्य और समृद्धि—पर आधारित है। इसका उद्देश्य पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को सम्मान, कौशल और आर्थिक अवसर प्रदान करना है। साथ ही, यह गुरु-शिष्य परंपरा और परिवार-आधारित पारंपरिक कौशल को संरक्षित एवं मजबूत करने का प्रयास करती है। वित्त वर्ष 2023-24 से 2027-28 तक के लिए इस केंद्रीय क्षेत्र की योजना का कुल परिव्यय 13,000 करोड़ रुपये है। इसके तहत 18 पारंपरिक ट्रेडों को शामिल किया गया है। योजना का लक्ष्य कारीगरों के उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता एवं बाजार पहुंच बढ़ाने के साथ उन्हें घरेलू और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जोड़ना है। जैसे-जैसे 17 सितंबर 2026 को योजना के 3 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, 30 लाख लाभार्थियों का पंजीकरण लक्ष्य पहले ही हासिल किया जा चुका है।

योजना की रूपरेखा और प्रमुख घटक- पीएम विश्वकर्मा योजना के अंतर्गत कारीगरों और शिल्पकारों को एक ही प्रारूप में विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है। इसके प्रमुख घटकों में मान्यता, कौशल उन्नयन, टूलकिट प्रोत्साहन, ऋण सहायता, डिजिटल लेनदेन के लिए प्रोत्साहन और विपणन सहायता शामिल हैं।

मान्यता- पंजीकरण और सत्यापन प्रक्रिया पूरी होने पर, लाभार्थियों को पीएम विश्वकर्मा प्रमाण पत्र और आईडी कार्ड के माध्यम से मान्यता प्रदान की जाती है।

कौशल उन्नयन- कौशल उन्नयन के माध्यम से, लाभार्थियों को आधुनिक उपकरणों, सर्वोत्तम प्रथाओं और नवीन डिजाइनों से परिचित कराया जाता है। प्रशिक्षण में डिजिटल लेनदेन, विपणन और उद्यमशीलता ज्ञान भी शामिल है।

बुनियादी प्रशिक्षण 5-7 दिनों के लिए चलता है, जबकि उन्नत प्रशिक्षण 15 दिनों या उससे अधिक के लिए होता है। प्रशिक्षुओं को प्रति दिन 500 रूपये का वजीफ़ा दिया जाता है।

आधुनिक टूलकिट- योजना के पात्र लाभार्थियों को 15,000 रुपये तक के आधुनिक टूलकिट प्रदान किए जाते हैं, जिससे वे अपने काम को बेहतर और अधिक कुशलता से कर सकें।

ऋण सहायता- पीएम विश्वकर्मा के अंतर्गत कारीगरों को 3 लाख रुपये तक का बिना जमानत उद्यम विकास ऋण दो किश्तों में दिया जाता है। पहली किश्त 1 लाख रुपये तक 18 महीनों की अवधि के लिए दी जाती है। लाभार्थियों को पहली किश्त के लिए बुनियादी प्रशिक्षण पूरा करना आवश्यक है। दूसरी किश?त 2 लाख रुपये तक 30 महीने की अ?वधि के लिए दी जाती है। ऋण पर 5 प्रतिशत की रियायती ब्याज दर लागू होती है, जबकि सरकार की ओर से 8 प्रतिशत तक की ब्याज छूट प्रदान की जाती है। दूसरी किश्त की पात्रता पहली किश्त के सफ़ल पुनर्भुगतान के साथ डिजिटल लेनदेन अपनाने या उन्नत प्रशिक्षण पूरा करने से जुड़ी है।

डिजिटल और बाजार सहायता- पीएम विश्वकर्मा योजना वित्तीय सहायता के साथ डिजिटल और विपणन सहायता भी प्रदान करती है। लाभार्थियों को डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए प्रति डिजिटल भुगतान या प्राप्ति 1 रुपये का प्रोत्साहन दिया जाता है, जो प्रति माह अधिकतम 100 लेनदेन तक है। विपणन सहायता के तहत व्यापार मेले, प्रदर्शनियां, ब्रांडिंग, विज्ञापन, प्रचार और जीईएम जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से जुड़ने के अवसर दिए जाते हैं। इससे कारीगरों को औपचारिक व्यावसायिक गतिविधियां अपनाने और व्यापक बाजारों तक पहुंच बनाने में सहायता मिलती है।

पात्रता, पंजीकरण और औपचारिकता योग्य आवेदक- पीएम विश्वकर्मा योजना 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के उन कारीगरों और शिल्पकारों के लिए है, जो 18 अधिसूचित पारंपरिक व्यवसायों में से किसी एक में अपने हाथों और औजारों से काम करते हैं। पात्र लाभार्थी स्वरोजगार के आधार पर असंगठित क्षेत्र में कार्यरत होने चाहिए। आवेदकों ने पिछले पांच वर्षों के दौरान स्वरोजगार या व्यवसाय विकास के लिए समान ऋण-आधारित सरकारी योजनाओं के तहत ऋण नहीं लिया हो। पंजीकरण और लाभ परिवार के एक सदस्य तक सीमित हैं, जिसमें पति, पत्नी और अविवाहित बच्चे शामिल हैं। सरकारी सेवा से जुड़ा व्यक्ति और उनके परिवार के सदस्य पात्र नहीं हैं। मुद्रा और पीएम स्वनिधि के लाभार्थी जिन्होंने अपने ऋण का पूरी तरह से भुगतान कर दिया है, वे पीएम विश्वकर्मा के अंतर्गत पात्र हैं।

स्व-नियोजित श्रमिक और असंगठित क्षेत्र ?- स्वरोजगार करने वाला व्यक्ति वह होता है जो किसी नियोक्ता के अधीन काम करने के बजाय अपना काम या व्यवसाय स्वयं करता है। वहीं, असंगठित क्षेत्र में मुख्य रूप से छोटे और अनौपचारिक व्यवसाय तथा संगठित क्षेत्र से बाहर काम करने वाले श्रमिक शामिल होते हैं।

पंजीकरण- आवेदन केवल कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) के माध्यम से जमा किए जा सकते हैं। त्रि-स्तरीय सत्यापन और अनुमोदन सत्यापन: ग्राम पंचायत या शहरी स्थानीय निकाय स्तर पर। पुनरीक्षण और सिफ़ारिश: जिला कार्यान्वयन समिति द्वारा। अनुमोदन: स्क्रीनिंग कमेटी द्वारा। पीएम विश्वकर्मा लाभार्थियों को औपचारिक एमएसएमई इकोसिस्टम में उद्यमियों के रूप में उद्यम सहायता प्रदाता प्लेटफॉर्म पर भी शामिल किया जाता है। यह उन्हें लागू सरकारी लाभों तक पहुंचने में सक्षम बनाता है।

उद्यम असिस्ट प्लेटफॉर्म- यह अनौपचारिक सूक्ष्म उद्यमों को पंजीकृत करने और उन्हें उद्यम पंजीकरण संख्या और प्रमाण पत्र प्रदान करने के लिए एक ऑनलाइन प्रणाली है। पीएम विश्वकर्मा के अंतर्गत प्रगति कौशल उन्नयन और टूलकिट समर्थन 15 सितंबर 2026 तक, 24.37 लाख से अधिक कारीगर बुनियादी कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं, जबकि 18.16 लाख से अधिक लाभार्थियों को टूलकिट प्रदान किए जा चुके हैं।

संस्थागत ऋण तक पहुंच को मजबूत करना- योजना के तहत लगभग 5,316 करोड़ रुपये के 6.19 लाख से अधिक ऋण स्वीकृत किए गए हैं। इस ऋण सहायता का उद्देश्य कारीगरों को कच्चा माल खरीदने, उपकरणों को आधुनिक बनाने, कारोबार का विस्तार करने और अपने उद्यमों को मजबूत करने में सहायता देना है।

नई पीढ़ी को नरेंद्र मोदी से मिले उड़ान के लिए पंख...

पी.वी. सिंधु

क्या होता अगर दस साल पहले कोई भारतीय युवा लड़की कहती कि उसे रॉकेट बनाना है। उसे इसरो में शामिल होकर नहीं, बल्कि अपना खुद का रॉकेट बनाना है। ऐसी स्थिति में शायद उसके आसपास के लोग खामोश रह जाते। फिर कोई बहुत सहानुभूति से उसे समझाता कि यह उसके बस की बात नहीं है। वह समझाता की अंतरिक्ष पर सिर्फ सरकार का हक होता है। इतने बड़े सपने तो दूसरे देशों के लोगों के लिए होते हैं। 18 जुलाई, 2026 को एक प्राइवेट भारतीय कंपनी का बनाया रॉकेट अंतरिक्ष की कक्षा में पहुंच गया। इस रॉकेट को स्काईरूट ने बनाया था, जिसकी बुनियाद दो नौजवान इंजीनियरों ने रखी थी। दोनों ने अपने सुरक्षित काम छोड़ कर इस लगभग नामुमकिन सपने को सच करने की ठान रखी थी। स्काईरूट की इस कामयाबी के साथ ही भारत दुनिया के उन सिर्फ तीन देशों में शामिल हो गया जहां किसी आम नागरिक की प्राइवेट कंपनी अंतरिक्ष तक पहुंच सकती है। इस कामयाबी को हासिल करने वाले बाकी दो देश अमेरिका और चीन हैं। वह लड़की, जिसके सपने के पूरा होने का किसी को भी भरोसा नहीं था, अब कह सकती है- ''मैं एलन मस्क बनना चाहती हूं। यह कोई नारा नहीं, बल्कि मेरा पक्का इरादा है।'' बेशक, वह अपने सपने को पूरा करने की यात्रा को शुरू कर सकती है। पिछले दस वर्षों में हमारे देश में प्रतिभाओं में कोई बदलाव नहीं आया है। भारत के पास काबिलियत हमेशा से थी। जो चीज़ बदली, वह था अवसर। हमारे इतिहास में ज्यादातर समय किसी बड़े सपने का जवाब यह होता था कि ऐसा करना मुमकिन नहीं है। इसलिए नहीं कि काबिलियत में कोई कमी थी। इसलिए कि मंजिल तक पहुंचने का दरवाजा ही बंद था। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सबसे खामोश और सबसे बड़ी कामयाबी यह रही कि अब वह दरवाजा खुल चुका है। इस बदलाव की गहराई को समझना बहुत जरूरी है। दशकों तक भारत में हर बड़े सपने को रुकावटों का सामना करना पड़ता था। कोई भी अहम काम करने के लिए आपको लाइसेंस, मंजूरी, जान-पहचान या प्रभावशाली परिवार के नाम की जरूरत पड़ती थी। देश में सपने देखने वालों की कभी कोई कमी नहीं थी। कमी थी तो सिर्फ दरवाजों की। और जब दरवाज़े कम हों तो वे सबसे पहले उनके लिए खुलते हैं जिनके पास पहले से चाबियां होती हैं। नौजवान, गरीब और वे लोग दरवाज़े के बाहर ही इंतज़ार करते रह जाते थे जिनके पास कोई बड़ी पहचान नहीं थी। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बंद दरवाजे को देखा और समझा कि असल में इसके क्या कारण थे। उन्होंने इस बदलाव को एक ही लाइन में बयान किया- सरकार का रवैया 'जब तक इजाज़त न हो, तब तक पाबंदी' से बदल कर 'जब तक मना न हो, तब तक इजाज़त' हो गया है। उनके पूरे दशक के काम के पीछे एक पक्का संकल्प रहा है- पाबंदियों की इस दीवार को गिराना और उसकी जगह खुले दरवाज़ों वाला देश बनाना। ऐसा देश जहां इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप किसकी संतान हैं। फ़र्क इससे पड़ता है कि आप क्या बनाने की काबिलियत रखते हैं। जरा गौर करें कि क्या-क्या खुल गया है। अंतरिक्ष पर 60 साल तक सरकार का एकाधिकार रहा। 2020 में उसे उन सबके लिए खोल दिया गया जिनके पास रॉकेट छोड़ने की योग्यता थी। फिर हमारे खेतों के ऊपर का आसमान खुला। उस रूल बुक को फाड़ कर फेंक दिया गया जिसके मुताबिक एक छोटे से ड्रोन को उड़ाने के लिए दर्जनों कागज़ात और इजाज़तों की ज़रूरत पड़ती थी। अब किसी छोटे शहर का कोई नौजवान अपना ड्रोन बना सकता है। उसे फोन के जरिए रजिस्टर कर अपना कारोबार शुरू कर सकता है। गांवों की हज़ारों महिलाओं के हाथों में ड्रोन सौंप दिए गए जिससे भविष्य का एक हिस्सा उनकी आजीविका का जरिया बन गया। इनमें से कुछ बदलाव बहुत दबे पांव आए लेकिन उनकी अहमियत उतनी ही ज्यादा थी। 2021 में मानचित्रों को मुक्त कर दिया ताकि किसी भारतीय कंपनी को उस देश का सर्वे करने के लिए किसी मंजूरी की ज़रूरत नहीं पड़े जिसमें वह पहले से काम कर रही है। 2023 में एक ही कानून के ज़रिए सैकड़ों कानूनों में बदलाव किया गया। इस कानून के जरिए एक हज़ार से ज्यादा वैसे मामलों में आपराधिक सजा के प्रावधान को खत्म कर दिया गया जिनका संबंध कागजी औपचारिकताओं से था। उद्देश्य यह था कि सिर्फ एक फॉर्म छूट जाने पर किसी को जेल नहीं जाना पड़े। 2014 में अंतरिक्ष से संबंधित सिर्फ एक स्टार्टअप था। लेकिन आज भारत में ऐसे लगभग 440 स्टार्टअप हैं। उस समय कोई भी ड्रोन स्टार्टअप नहीं था मगर अब इनकी संख्या सैंकड़ों में पहुंच चुकी है। लेकिन सिर्फ दरवाजे खोलना अधूरी बात होगी। एक खुले दरवाज़े का कोई फ़ायदा नहीं अगर वहां तक पहुंचने का आपके पास कोई रास्ता ही न हो। यहीं पर इस सोच की न्यायसंगतता नजर आती है। 2016 में स्टार्टअप इंडिया की शुरुआत के समय देश में करीब 350 मान्यता प्राप्त स्टार्टअप थे। आज इनकी संख्या दो लाख से ज़्यादा है और इन्होंने बीस लाख से ज़्यादा नौकरियां सृजित की हैं। ये अब सिर्फ़ बैंगलोर या दिल्ली तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि देश के हर कोने में छोटे शहरों और कस्बों तक पहुँच चुके हैं, जिनमें से एक लाख से भी अधिक की शुरुआत महिलाओं द्वारा की गई है। ये ऋण खास तौर पर उन लोगों के लिए थे जिन्हें पुरानी व्यवस्था में नज़रअंदाज़ किया गया था ङ्क जैसे दलित और आदिवासी परिवारों के पहली बार व्यवसाय शुरू करने वाले लोग और महिलाएँ। साथ ही, करोड़ों ऐसे भारतीय जिनके पास कभी बैंक खाता नहीं था, उन्हें आखिरकार इस दायरे में लाया गया, जहाँ एक साधारण फोन ही बैंक बन गया। आज एक सब्जी बेचने वाला और एक स्टार्ट-अप का संस्थापक दोनों एक ही तरीके से पैसे का लेन-देन करते हैं। युवाओं को पढ़ाने के तरीके पर भी नए सिरे से सोचा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने उस व्यवस्था को बदल दिया है जिसके तहत 16 साल के छात्र को किसी एक विषय (स्ट्रीम) में जबरदस्ती दाखिल करा दिया जाता था, जो उसे जीवन भर की सजा की तरह लगता था लेकिन अब यह जीवन भर की सजा की तरह नहीं रहा। अब छात्र ऐसे विषयों को एक साथ पढ़ सकते हैं जिन्हें पहले कभी साथ नहीं पढ़ाया जाता था, किसी डिग्री को बीच में छोड़कर वहीं से दोबारा शुरू कर सकते हैं और देश से बाहर जाए बिना ही विश्वस्तरीय पढ़ाई कर सकते हैं, क्योंकि दुनिया भर के विश्वविद्यालयों ने अब यहीं अपने कैंपस खोलना शुरू कर दिया है। यह सब एक ही बात की ओर इशारा करता है, एक ऐसा देश जिसने आखिरकार अपने युवाओं पर भरोसा करने का फ़ैसला किया है। हमारे इतिहास के ज़्यादातर समय में, हमारी सबसे प्रतिभाशाली पीढ़ी को लगता था कि कुछ ठोस करने के लिए उन्हें विदेश जाना होगा। हमने उन्हें धीरे-धीरे, साल-दर-साल उन देशों के हाथों खो दिया, जिनके पास ऐसे अनेक अवसर थे जो हमारे पास नहीं थे। यहाँ अंतरिक्ष से लेकर सिलिकॉन तक, सॉफ्टवेयर से लेकर कक्षाओं तक, उन दरवाज़ों को खोलकर इस नेतृत्व ने उस प्रतिभा को देश में रुकने की एक वजह दी है और यहाँ तक कि घर वापस लौटने का एक कारण भी दिया है। भविष्य का निर्माण करना अब कोई ऐसा काम नहीं रहा जिसके लिए आपको भारत छोड़ना पड़े। अब देश में ही रहकर यह काम कर सकते हैं। और यह वह पक्ष है जिसे कोई भी नीतिगत दस्तावेज़ बयान नहीं कर सकता, वही पक्ष जो बाकी सभी बातों को एक अलग रूप में प्रस्तुत करता है। एक पूरी पीढ़ी को हर तरह का अवसर दिए जाने के बाद भी वे खुद को उपेक्षित महसूस कर सकती है। नरेंद्र मोदी ने भारत के युवाओं को कभी भी ऐसी समस्या नहीं माना जिसे बस 'मैनेज' करना हो या सिर्फ़ वोट बैंक समझा हो। वे परीक्षा से पहले छात्रों के साथ बैठकर उनसे डर, दबाव और उम्मीद के बारे में खुलकर बात करते हैं। वे किसी शासक की तरह प्रजा को उपदेश नहीं देते हैं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति की तरह बात करते हैं जो यह याद रखता है कि युवा होना, डरा होना और साथ ही सपनों से भरा होना कैसा होता है। वे युवाओं से बराबरी के स्तर पर बात करते हैं। वे न तो उन्हें नीचा दिखाते हैं और न ही उनकी बात को अनसुना करते हैं। जब कठिन पल आते हैं, तो वे उनका डटकर सामना करते हैं और युवाओं को अपने उदाहरण से दिखाते हैं कि कुछ भी छिपाने की ज़रूरत नहीं है। यह कोई छोटी बात नहीं है। हो सकता है कि यह सबसे बड़ी बात हो। क्योंकि जब किसी युवा व्यक्ति को काबिल मानकर बात की जाती है तो धीरे-धीरे उसे भी यकीन होने लगता है कि वह वाकई काबिल है। जो युवा खुद को काबिल मानता है, वही किराए के कमरे में रॉकेट कंपनी शुरू करता है और कुछ ही सालों में अंतरिक्ष तक पहुँच जाता है। हर पीढ़ी को वे सीमाएँ विरासत में मिलती हैं जिन्हें उसने स्वयं नहीं चुना होता। हमारे दादा-दादी को अभाव विरासत में मिला। हमारे माता-पिता को अनुमति और आदेश विरासत में मिले और मिला ऊपर बैठे किसी व्यक्ति के 'हाँ' कहने का लंबा इंतज़ार। हमें कुछ अलग विरासत में मिला है: एक ऐसा देश जो आखिरकार इसका निर्माण करने के लिए हम पर विश्वास करता है। यही इस नेतृत्व का वास्तविक मापदंड है। यह कोई योजना या आंकड़ा नहीं, बल्कि एक युवा भारतीय की सोच और कल्पना के दायरे में आया बदलाव है। जुलाई में अंतरिक्ष तक पहुँचा रॉकेट उन लोगों द्वारा बनाया गया था, जिनसे कभी कहा गया था कि उनके लिए कोई दरवाज़ा ही नहीं खुला है। वह खुला दरवाज़ा अब मौजूद है और ऐसे ही हज़ार अन्य दरवाज़े भी खुले हैं। अब किसी युवा भारतीय के लिए केवल यही सवाल नहीं रह गया है कि उसे सपने देखने की अनुमति है या नहीं; अब सवाल यह है कि वह कितनी दूर जाने का इरादा रखता है।

(लेखक दो बार की ओलंपिक पदक विजेता है और वर्तमान में आंध्र प्रदेश सरकार में डिप्टी कलेक्टर के पद पर कार्यरत है।)

प्रौद्योगिकी भारत के लिए आर्थिक परिसंपत्ति और प्रतिस्पर्धी शासन लाभ बनी.....

श्री राजीव गौबा

शासन की विफलता का कारण प्राय: नीयत की विफलता नहीं होती है। कोई सब्सिडी उदार हो सकती है, फिर भी उसके क्रियान्वयन में रिसाव की गुंजाइश रह सकती है। कोई विनियमन जनहित की भावना से बनाया गया हो सकता है, लेकिन प्रक्रियागत त्रुटि की आशंका किसी ईमानदार उद्यमी को निर्णय लेने से हतोत्साहित कर सकती है। इसी प्रकार, शिकायत निवारण के लिए पोर्टल उपलब्ध होने के बावजूद किसी नागरिक को यह महसूस हो सकता है कि उसकी शिकायत पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। इसलिए, महत्वपूर्ण प्रश्न केवल यह नहीं है कि किसी नीति के पीछे मंशा कितनी अच्छी थी, बल्कि यह भी है कि उसके परिणामस्वरूप व्यवस्था ने व्यवहार में किस प्रकार के परिणाम उत्पन्न किए। वास्तविक कसौटी यह है कि क्या व्यवस्था वांछित व्यवहार को अधिक सरल, पूर्वानुमेय और व्यापक स्तर पर अपनाए जाने योग्य बनाती है। भारत जैसे विशाल देश में शासन केवल सरकारी कार्यक्रमों के प्रशासन तक सीमित नहीं है। इसका उद्देश्य ऐसी व्यवस्थाओं का निर्माण करना है, जो करोड़ों लोगों तक सेवाओं और योजनाओं को तेज़ी, दक्षता और पूर्वानुमेयता के साथ पहुंचाने में सक्षम हों। यही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गुजरात से लेकर केंद्र सरकार तक लगभग 25 वर्षों की शासन-यात्रा का मूल आधार रहा है। इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण बदलाव अलग-अलग योजनाओं के प्रबंधन से आगे बढ़कर उन व्यवस्थाओं के पुनर्गठन की दिशा में रहा है, जिनके माध्यम से सरकार नागरिकों, व्यवसायों और अधिकारियों के साथ संवाद और सहभागिता करती है। इसका मूल सिद्धांत सरल है—वांछित परिणाम को प्राप्त करना सरल बनाया जाए, उसे मापना आसान हो और व्यापक स्तर पर लागू करना भी सुगम हो। इस परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी की केंद्रीय भूमिका रही है। डिजिटल पहचान, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, मानकीकृत प्रक्रियाएं, डैशबोर्ड, रैंकिंग, डिजिटल खरीद प्रणाली, शिकायत निवारण मंच और सार्वजनिक निष्पादन आंकड़ों ने शासन-व्यवस्था का एक नया प्रतिमान स्थापित किया है। इसके माध्यम से सरकार अभूतपूर्व स्तर और गति के साथ सेवाओं एवं कार्यक्रमों का संचालन करने में सक्षम हुई है। इसका आर्थिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। जेएएम ढांचे—जन धन, आधार और मोबाइल कनेक्टिविटी—ने सरकार और नागरिक के बीच प्रत्यक्ष डिजिटल संपर्क स्थापित किया है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से लाभार्थियों के बैंक खातों में 53 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि पहुंचाई गई है। वहीं, डुप्लीकेट, मृत और फर्जी लाभार्थियों को हटाकर सरकारी कोष में अनुमानित 5.14 लाख करोड़ रुपये की बचत हुई है। 2025 में किए गए एक आकलन में पाया गया कि लाभार्थियों की संख्या में 16 गुना विस्तार के बावजूद, कल्याण दक्षता सूचकांक—अर्थात सरकार द्वारा खर्च की गई राशि में से वास्तव में नागरिकों तक पहुंचने वाली राशि का अनुपात—2014 में 0.32 से बढ़कर 2023 में 0.91 हो गया। पीएम-किसान के तहत 9.49 करोड़ किसानों के बैंक खातों में सीधे 4.47 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि अंतरित की गई है। वहीं, 2.1 करोड़ अपात्र लाभार्थियों को हटाए जाने से अनुमानित 22,106 करोड़ रुपये की बचत हुई। खाद्य वितरण प्रणाली में 5.03 करोड़ से अधिक डुप्लीकेट, फर्जी या अस्तित्वहीन राशन कार्ड हटाए गए, जबकि 80 करोड़ लोगों को प्रत्येक माह नि:शुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया गया। यह मुद्रास्फीति के अनुरूप समायोजित सार्वभौमिक मूल आय के रूप में वैश्विक स्तर पर अपनी तरह का एक विशिष्ट सहायता है। इसका उद्देश्य केवल योजनाओं में होने वाले रिसाव को रोकना नहीं है, बल्कि कल्याणकारी योजनाओं के लाभों की लक्षित, दक्ष और व्यापक स्तर पर प्रभावी पहुंच सुनिश्चित करना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'जन भागीदारी' के सिद्धांत से प्रेरित होकर, नागरिक भी शासन-व्यवस्था में लगातार अधिक सक्रिय भागीदार बने हैं। 'गिव इट अप' अभियान के माध्यम से परिवारों को स्वेच्छा से एलपीजी सब्सिडी छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस अभियान के तहत 1.13 करोड़ से अधिक उपभोक्ताओं ने स्वेच्छा से सब्सिडी छोड़ने की पहल की, जबकि 4.15 करोड़ डुप्लीकेट, फर्जी, अस्तित्वहीन या निष्क्रिय एलपीजी कनेक्शनों को समाप्त किया गया। यह दर्शाता है कि नीतियां केवल विनियमन के माध्यम से ही प्रभावी नहीं होतीं, बल्कि विश्वास, पारदर्शिता और नागरिक सहभागिता के माध्यम से भी प्रभावी ढंग से लागू की जा सकती हैं। यही सिद्धांत आर्थिक विनियमन के क्षेत्र में भी लागू होता है। किसी उद्यमी के लिए विनियमन की लागत केवल धन तक सीमित नहीं होती। इसमें समय, ध्यान, अनिश्चितता और कई बार आत्मविश्वास भी प्रभावित होता है। अत्यधिक अपराधीकरण के कारण उत्पादक अनुपालन के बजाय रक्षात्मक व्यवहार को बढ़ावा मिल सकता है। जन विश्वास सुधार इसी समस्या का प्रत्यक्ष समाधान प्रस्तुत करते हैं। जन विश्वास अधिनियम, 2023 के तहत 42 केंद्रीय अधिनियमों के 183 प्रावधानों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया गया। वर्ष 2026 के कानून के तहत इस दिशा में और व्यापक कदम उठाया गया। इसमें 23 मंत्रालयों द्वारा प्रशासित 79 केंद्रीय अधिनियमों के 784 प्रावधानों में संशोधन किया गया। इनमें 717 प्रावधानों और 1,000 से अधिक अपराधों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया गया, जबकि 67 प्रावधानों में संशोधन कर जीवन सुगमता को बढ़ावा दिया गया। यह अधिनियम अप्रैल 2026 में प्रभावी हुआ। यही सोच नियामकीय अनुपालन बोझ को कम करने की पहल में भी दिखाई देती है। नवंबर 2025 तक 47,000 से अधिक अनुपालनों को कम किया जा चुका था। इनमें 16,108 अनुपालनों को सरल बनाया गया, 22,287 को डिजिटल किया गया, 4,458 को अपराध की श्रेणी से बाहर किया गया और 4,270 अनावश्यक अनुपालनों को समाप्त किया गया। व्यक्तिगत रूप से देखें तो इनमें से प्रत्येक कमी छोटी लग सकती है। लेकिन लाखों उद्यमों और नागरिकों के संदर्भ में ये छोटे-छोटे बदलाव मिलकर महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ में परिवर्तित हो जाते हैं। यही सिद्धांत सार्वजनिक खरीद के क्षेत्र में भी दिखाई देता है। जेईएम (गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस) ने खंडित और संबंध-आधारित खरीद व्यवस्था के स्थान पर एक अधिक पारदर्शी डिजिटल बाज़ार व्यवस्था स्थापित की है, जहां खरीदार विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं की तुलना कर सकते हैं और विक्रेता सरकारी मांग को देख सकते हैं। 30 जुलाई 2026 तक जेईएम पर 11.75 लाख एमएसएमई, 37,758 स्टार्टअप और 2.17 लाख महिला उद्यमी पंजीकृत थे। वित्त वर्ष 2025-26 में इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से एमएसएमई से की गई खरीद 2.37 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गई। ये आंकड़े महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि सरकारी मांग तक पहुंच स्वयं औद्योगिक नीति के एक प्रभावी साधन के रूप में कार्य कर सकती है। जब कोई छोटा उद्यम सार्वजनिक क्षेत्र की मांग को देख सकता है और उसमें प्रतिस्पर्धा कर सकता है, तो उसके पास अपनी क्षमता, गुणवत्ता और उत्पादन के परिमाण में निवेश करने के लिए अधिक ठोस कारण होता है।

निष्पादन को भी लगातार अधिक मापनीय बनाया जा रहा है।

वर्ष 2026 में केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली (सीपीग्राम्स) के तहत निर्धारित शिकायत निवारण की समय-सीमा 30 दिनों से घटाकर 21 दिन कर दी गई। 1 जनवरी से 15 जुलाई 2026 के बीच इस प्लेटफॉर्म पर 15.21 लाख शिकायतें प्राप्त हुईं। केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों के लिए शिकायतों के निपटारे में औसतन 13 दिन का समय लगा। इसका व्यापक सिद्धांत स्पष्ट है—जिसे मापा जा सकता है, उसे बेहतर ढंग से प्रबंधित किया जा सकता है और जिसे देखा जा सकता है, उसमें सुधार किया जा सकता है। यही वर्तमान में हो रहे गहरे शासन-परिवर्तन का आधार है। किसान को जब सीधे सहायता प्राप्त होती है, तो वह अधिक निश्चितता के साथ अपनी योजनाएं बना सकता है। अनावश्यक अनुपालनों के कम होने से उद्यमी अपना ध्यान व्यवसाय के निर्माण और विस्तार पर केंद्रित कर सकता है। सार्वजनिक मांग तक पहुंच मिलने से एमएसएमई अपनी उत्पादन क्षमता में निवेश कर सकता है। वहीं, शिकायत की स्थिति को ट्रैक कर सकने वाला नागरिक शासन-व्यवस्था के प्रति अधिक विश्वास महसूस कर सकता है। इन सभी मामलों में शासन व्यवस्था लाभार्थी के व्यवहार को प्रभावित करती है। और जब ऐसा बदलाव लाखों नागरिकों, उद्यमों और अधिकारियों के स्तर पर होता है, तो यह व्यापक आर्थिक लाभ में परिवर्तित होता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की शासन-व्यवस्था की अवधारणा से आया व्यापक परिवर्तन राज्य, नागरिक, उद्यमी और अधिकारी के बीच एक अधिक सुविचारित और उद्देश्यपूर्ण संवाद-तंत्र का निर्माण है। यह नई व्यवस्था 'नागरिक पर विश्वास' अर्थात 'जन विश्वास' के सिद्धांत पर आधारित है, जिसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'विकसित भारत' के लिए शासन के नए प्रतिमान के रूप में परिभाषित किया है। भारत के विशाल आकार को कभी मुख्यत: एक प्रशासनिक चुनौती के रूप में देखा जाता था। उभरती हुई शासन-व्यवस्था एक अलग संभावना प्रस्तुत करती है—जब साझा डिजिटल और संस्थागत व्यवस्थाएं सेवाओं, बाजारों और अवसरों को अधिक दक्षता के साथ लोगों तक पहुंचाने में सक्षम हों, तो देश का विशाल आकार एक चुनौती के बजाय एक लाभ में परिवर्तित हो सकता है। भारत के विकास के अगले चरण की दिशा पूंजी, अवसंरचना, कौशल, प्रौद्योगिकी और उद्यमिता जैसे कारकों पर निर्भर करेगी। लेकिन इन सभी शक्तियों को किस प्रकार और कितनी प्रभावशीलता से एक साथ लाया जाता है, यह शासन-व्यवस्था पर निर्भर करता है। इसीलिए, शासन-व्यवस्था का मोदी मॉडल अब केवल एक प्रशासनिक कार्य तक सीमित नहीं रह गया है। यह एक आर्थिक परिसंपत्ति के रूप में उभर रहा है और विकसित अर्थव्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ते भारत के लिए संभावित रूप से सबसे महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक लाभों में से एक बन सकता है।

(लेखक नीति आयोग के सदस्य और भारत सरकार के पूर्व कैबिनेट सचिव हैं।)

राजाबाजार जैन मंदिर में धर्मध्वजारोहण के साथ दस दिवसीय पर्युषण महापर्व का उत्साहपूर्ण शुभारंभ

■ मनुष्य कर्मों से महान बनता है, विचारों से बड़ा होता है : आचार्य विनम्र सागरजी महाराज

छत्रपति संभाजीनगर (विश्व परिवार)। ख.दि. जैन पंचायत पार्श्वनाथ मंदिर, राजाबाजार में आचार्य विनम्र सागरजी गुरुदेव के ससंघ सान्निध्य में दस दिवसीय पर्युषण महापर्व का आज बड़े उत्साह एवं भक्तिभाव के साथ शुभारंभ हुआ। भगवान शांतिनाथ के मुख्य मंदिर में पंचायत अध्यक्ष महावीर पाटनी के हस्ते धर्मध्वजारोहण कर पर्युषण पर्व की विधिवत शुरुआत की गई।

राजाबाजार जैन मंदिर में दस दिवसीय आयोजन के दौरान इंद्र-इंद्राणी बनने का सौभाग्य विजयादेवी, निलेश, नितीन, उषा, सारिका सेठी परिवार को प्राप्त हुआ। वहीं शांतिधारा का सौभाग्य निलेश कस्तुरचंद पाटनी को मिला। हिराकाका प्रांगण में यजमान इंद्र बनने का सौभाग्य हेमलता, इंद्रचंद, ममता, आशिष चुड़ीवाल, प्रकाश चंदा, सचिन एवं डॉ. राहुल कासलीवाल को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर अरुण पाटनी, महावीर ठोले, यतीन ठोले, ललित पाटनी, किरण पहाड़े, जितेंद्र पाटनी, चंदा कासलीवाल, संतोष सेठी, निलेश सेठी, बाबूसेठ पहाड़े, ताराबाई कासलीवाल, दिलीप कासलीवाल, संदीप गंगवाल, रीमा पाटनी, प्रमोद ठोले, अशोक गंगवाल, प्रमोद पहाड़े, अनिल कासलीवाल, डॉ. शैलेश चांदीवाल सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित थे। इसी के साथ पर्युषण महापर्व के शिविर एवं धार्मिक कार्यक्रमों का भी शुभारंभ हुआ।

पर्युषण पर्व के प्रथम दिवस उत्तम क्षमा धर्म के पावन अवसर पर भगवान शांतिनाथ का पंचामृत अभिषेक एवं महाशांतिधारा संपन्न हुई। णमोकार भक्ति मंडल द्वारा प्रस्तुत सुमधुर संगीतमय भक्तिगीतों के बीच संपूर्ण पंचामृत अभिषेक विधि भक्तिभाव से संपन्न हुई।

इस अवसर पर आचार्य विनम्र सागरजी गुरुदेव ने 'उत्तम क्षमा धर्म' विषय पर प्रवचन देते हुए कहा कि आत्मा में उत्पन्न होने वाले क्रोधरूपी विकार को समाप्त करना ही क्षमा गुण को प्रकट करना है। क्षमा वीरस्य भूषणम् अर्थात क्षमा करना वीर पुरुषों तथा साधु-संतों का आभूषण है।

उन्होंने कहा कि क्षमा आत्मा का निज धर्म है। यह जीव की शुद्ध परिणति और विश्वप्रेम का अमूल्य खजाना है। जहां क्षमा है, वहां राग-द्वेष के लिए कोई स्थान नहीं होता। मन में राग-द्वेष एवं वैरभाव रखने से शत्रुता बढ़ती है और यही दुर्गति का कारण बनती है। इसलिए मनुष्य को वैरभाव छोड़कर आत्मा को शांति प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि क्षमा करने से मनुष्य के मन, वचन और काया—तीनों की शुद्धि होती है। इससे संतोष, संयम, निराकुलता आदि गुणों में वृद्धि होती है। इसलिए मनुष्य को बड़े प्रयासपूर्वक सभी जीवों से क्षमा मांगनी चाहिए और सभी जीवों को क्षमा करना चाहिए।

उन्होंने अपने उद्बोधन के अंत में कहा कि मनुष्य कर्मों से महान बनता है, विचारों से बड़ा होता है।

सायंकाल 7 बजे भगवान शांतिनाथ की आरती एवं शास्त्र वाचन का आयोजन किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम में राजाबाजार सहित आसपास के क्षेत्र से बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं समाजबंधु उपस्थित रहे। इस अवसर पर मंदिर के विश्वस्त, कार्यकारिणी मंडल, विभिन्न मंडलों के पदाधिकारी तथा विनम्र चातुर्मास समिति के सदस्य उपस्थित थे।

दस दिवसीय पर्युषण महापर्व के अवसर पर मंदिर परिसर में आकर्षक विद्युत रोशनी की सजावट भी की गई है, जिससे मंदिर परिसर भक्तिमय एवं आकर्षक नजर आ रहा है।

पर्यूषण महापर्व के पहले दिन हुई उत्तम क्षमा धर्म की आराधना

■ वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर में दशलक्षण महामंडल विधान का हुआ शुभारम्भ

तालबेहट (ललितपुर) (विश्व परिवार)। सिद्ध क्षेत्र पावागिरि सहित कसबे के दोनों जैन मंदिरों में बुधवार को पर्यूषण महापर्व के पहले दिन उत्तम क्षमा धर्म की आराधना की गयी। भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक चलने वाले इस दस दिवसीय महापर्व में जैन श्रावकों की आत्मशुद्धि के लिए धर्म-साधना हेतु विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किये। कसबे के पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पं. संतोष कुमार जैन शास्त्री अमृत के निर्देशन में अभिषेक-शांतिधारा, पूजन-विधान का आयोजन किया गया। संतोष शास्त्री ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा दशलक्षण धर्म का पहला दिन उत्तम क्षमा का होता है जो हमें क्रोध से बचने का संदेश देता है। क्रोध आत्मिक उन्नति में बाधक एवं मनुष्य के पतन का कारण बनता है। इसके रहते हमें कभी आत्मा का बोध नहीं हो सकता। वहीं वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर में बाल ब्रह्मचारिणी मानी दीदी झाँसी के निर्देशन में अभिषेक-शांतिधारा की क्रियाएँ संपन्न की गयी। जिसमें सीए मोहित जैन दिल्ली, विकास भंडारी, अशोक जैन, पुष्पेंद्र विरधा, हितेंद्र पवैया, अंजेश गुन्देरा ने प्रमुख भूमिका निभाई। नित्यमय पूजन एवं भक्तामर महामंडल विधान के उपरांत दशलक्षण महामंडल विधान का शुभारम्भ किया। ध्वजारोहण रोहित रजत जैन बबीना ने किया। मंडप पर मंगल कलश की स्थापना प्रियंका, सोनम, राखी, अमृता एवं आभा जैन अखंड ज्योति की स्थापना अलका, नीतू, स्वाति, आकांक्षा जैन, जिनवाणी की स्थापना विभा जैन ने की। दोपहर की बेला में तत्वार्थ सूत्र का स्वाध्याय किया। मानी दीदी ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा क्रोध को जीतना सबसे बड़ा धर्म है जिसे उत्तम क्षमा कहते हैं। यह कहने और सुनने में तो अच्छा लगता है लेकिन क्षमा को स्वीकार करना बहुत कठिन है जो जीवन के मार्ग को सुगम बना देता है। इन दिनों श्रावकों में संयम को धारण कर तप-त्याग के साथ व्रत उपवास एवं एकासन करने की विशेष परम्परा है। सायं काल की बेला में सामूहिक आरती, णमोकार महामंत्र का पाठ एवं शास्त्र प्रवचन के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसमें सकल दिगम्बर जैन समाज का सक्रिय सहयोग रहा। संचालन विशाल जैन पवा ने किया। आभार व्यक्त अनिल जैन ने किया।

दीर्घकालिक बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए सुरक्षित स्वास्थ्य सेवा : डॉ. प्रदीप शर्मा

रायपुर (विश्व परिवार)। हर साल 17 सितंबर को मनाया जाने वाला World Patient Safety Day हमें एक सरल किंतु महत्वपूर्ण सिद्धांत की याद दिलाता है, स्वास्थ्य सेवा केवल प्रभावी होनी ही नहीं चाहिए, बल्कि सुरक्षित भी होनी चाहिए।

इस वर्ष असंक्रामक रोगों (NCDs) से पीड़ित लोगों के लिए सुरक्षित देखभाल पर दिया गया फोकस भारत के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है। डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, कैंसर और सांस से जुड़ी दीर्घकालिक बीमारियां लाखों परिवारों को प्रभावित करती हैं और अक्सर वर्षों, यहां तक कि जीवनभर उपचार की आवश्यकता होती है।

कई तीव्र बीमारियों के विपरीत, असंक्रामक रोग धीरे-धीरे विकसित होते हैं। इनके प्रबंधन में बार-बार परामर्श, जांच, दवाइयां, जीवनशैली में बदलाव और कभी-कभी अस्पताल में भर्ती होना शामिल होता है। स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के साथ यह लंबा जुड़ाव, देरी से निदान और दवाओं में गलती से लेकर उपचार में अनियमितता और अपर्याप्त फॉलो-अप तक, टाले जा सकने वाले नुकसान के कई अवसर भी पैदा करता है।

बचाव है सुरक्षित देखभाल की पहली सीढ़ी

असंक्रामक रोगों के बोझ का एक बड़ा हिस्सा स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर कम किया जा सकता है। सब्जियों, फलों, साबुत अनाज और दालों से भरपूर संतुलित आहार, और अतिरिक्त नमक, चीनी, संतृप्त वसा तथा अधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों से परहेज, हृदय संबंधी और मेटाबॉलिक जोखिमों को काफी हद तक कम कर सकता है। नियमित शारीरिक गतिविधि भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

अमलेश्वर में स्वच्छ शहर व स्वस्थ भविष्य की दिशा में बड़ी पहल

■ 7.48 करोड़ की एसटीपी परियोजना को मिली मंजूरी

अमलेश्वर (विश्व परिवार)। नगर पालिका परिषद अमलेश्वर ने शहर के समग्र विकास और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम उठाया है। नगर को स्वच्छ, हरा-भरा और नागरिकों को स्वस्थ वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से मान. उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव के मंशा अनुरूप छत्तीसगढ़ शासन के राज्य शहरी विकास अभिकरण द्वारा 748.36 लाख की लागत से आधुनिक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई है। इस योजना के क्रियान्वयन हेतु नगर पालिका परिषद द्वारा निविदाएं भी आमंत्रित कर ली गई हैं।

एसटीपी का मुख्य उद्देश्य शहर के गंदे पानी को वैज्ञानिक विधि से उपचारित कर पुन: उपयोग योग्य बनाना है। दुर्ग सांसद विजय बघेल के मार्गदर्शन तथा जिला प्रशासन के विशेष सहयोग से परियोजना के लिए खसरा नंबर 137/1, 671/2 एवं 530 में कुल 1.05 हेक्टेयर भूमि का आवंटन कार्य पूर्ण हो चुका है। इस प्रस्तावित स्थल पर 1.70 एमएलडी की कुल क्षमता वाले 03 एसटीपी प्लांट स्थापित किए जाएंगे।

उपमुख्यमंत्री एवं नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव द्वारा इस योजना की वित्तीय स्वीकृति दी गई है। नवगठित निकाय होने के नाते नगर पालिका अध्यक्ष दयानंद सोनकर ने अमलेश्वर के अंतर्गत आने वाले सभी ग्रामों को इस सुविधा का लाभ दिलाने हेतु सर्वेक्षण एवं विस्तृत प्रस्ताव तैयार कराने में अग्रणी भूमिका निभाई।एसटीपी के अतिरिक्त, नगर पालिका ने 101.00 लाख की लागत से मैटेरियल रिकवरी फैसिलिटी प्लांट का निर्माण कार्य भी शुरू कर दिया है, जो शहर को 'जीरो वेस्ट' बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। इस एमआरएफप्लांट के माध्यम से कचरे का वैज्ञानिक पृथक्कीकरण, रीसाइक्लिंग और पुनर्चक्रण संभव होगा। इससे प्लास्टिक एवं जैविक कचरा लैंडफिल साइट तक नहीं पहुंचेगा, जिससे जल, थल और वायु प्रदूषण में भारी कमी आएगी। साथ ही, इस परियोजना से स्थानीय स्तर पर नए रोजगार का सृजन भी होगा। नगर पालिका परिषद अमलेश्वर ने समस्त नगरवासियों से आग्रह किया है कि वे घरों से निकलने वाले गीले और सूखे कचरे को पृथक-पृथक करके दें, ताकि शहर को पूर्णत: कचरा-मुक्त और जीरो वेस्ट बनाया जा सके।

रेल मदद से यात्रियों को समय पर मिली चिकित्सीय सहायता

■ रायपुर रेल मंडल की त्वरित कार्रवाई से ट्रेन में यात्रियों को दवा, एंबुलेंस एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर रेल मंडल द्वारा यात्रियों की सुविधा एवं सहायता के लिए 'रेल मदद' सेवा के माध्यम से प्राप्त चिकित्सा संबंधी शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए यात्रियों को आवश्यक चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। 01 जनवरी से सितम्बर 2026 के दौरान 1139 मामलों में रेल मदद टीम ने यात्रियों की समस्या पर तत्काल संज्ञान लेकर संबंधित स्वास्थ्य इकाइयों एवं रेलवे अधिकारियों के समन्वय से सहायता उपलब्ध कराई। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का रायपुर रेल मंडल का वाणिज्य कंट्रोल में संचालित रेलमदद टीम यात्रियों की स्वास्थ्य सेवाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए रेलमदद (RailMadad) प्लेटफॉर्म के माध्यम से चौबीसों घंटे त्वरित चिकित्सा सहायता उपलब्ध करा रहा है। यात्रा के दौरान किसी भी यात्री की तबीयत खराब होने अथवा चिकित्सकीय सहायता की आवश्यकता होने पर रेलमदद के माध्यम से सूचना प्राप्त होते ही रेलवे के वाणिज्य एवं चिकित्सा विभाग एवं स्टेशन प्रबंधन की टीम समन्वित रूप से सक्रिय होकर संबंधित स्टेशन पर डॉक्टर, पैरामेडिकल स्टाफ, आवश्यक दवाइयों तथा अन्य जरूरी चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था सुनिश्चित करती है।

साम्राज्य रेसीडेंसी में हाथी के साक्षात स्वरूप में विराजे प्रथम पूज्य गजानन

रायपुर (विश्व परिवार)। राजधानी रायपुर में गणेशोत्सव की धूम है। इसी क्रम में साम्राज्य रेसीडेंसी, रायपुर में इस वर्ष गणपति बप्पा का एक अत्यंत दुर्लभ और अलौकिक स्वरूप स्थापित किया गया है, जो पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है।

यहाँ प्रथम पूज्य भगवान गणेश साक्षात हाथी के स्वरूप में विराजमान हैं। आमतौर पर मूर्तियों में कलात्मक रूप देखा जाता है, परंतु यहाँ बप्पा का विग्रह बिल्कुल जीवंत हाथी के समान प्रतीत होता है। विशाल मस्तक, लंबी सूंड, बड़े कान और शांत व करुणामयी आँखें, भगवा संत-वस्त्र, माथे पर चंदन का त्रिपुंड और हाथ पर बना पवित्र ' ?' इस स्वरूप को और भी दिव्य बना रहा है। ध्यान मुद्रा में विराजे गजानन को देखकर ऐसा लगता है मानो स्वयं गजानन साक्षात धरती पर उतर आए हों।

पंडाल को आकर्षक फूलों, रोशनी और पारंपरिक सजावट से भव्य रूप दिया गया है। शाम होते ही विद्युत सज्जा से पंडाल की शोभा देखते ही बनती है।

समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष हमारा उद्देश्य भक्तों को बप्पा के आदि और वास्तविक स्वरूप के दर्शन कराना था। इसलिए इस बार हाथी के साक्षात स्वरूप को चुना गया। यह स्वरूप हमें सिखाता है कि बुद्धि के साथ-साथ विशाल हृदय और शांत चित्त भी होना चाहिए।

गणेशोत्सव के दौरान प्रतिदिन सुबह 9 बजे और शाम 8 बजे महाआरती, उसके पश्चात महाप्रसाद वितरण, तथा रात्रि में भजन-कीर्तन का आयोजन किया जा रहा है।

साम्राज्य रेसीडेंसी गणेश उत्सव समिति ने रायपुर के सभी धर्मप्रेमी नागरिकों, पत्रकार बंधुओं एवं श्रद्धालुओं से अपील की है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर बप्पा के इस दुर्लभ हाथी-स्वरूप के दर्शन कर पुण्य लाभ अर्जित करें।

राहुल: बप्पा का यह हाथी-स्वरूप बहुत ही दिव्य है। हमारा प्रयास है कि हर भक्त को साक्षात दर्शन का अनुभव हो।

स्वच्छता ही सेवा अभियान 2026 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक

■ एक माह तक चलेगा स्वच्छता अभियान, थीम - स्वच्छता में सहभाग, स्वच्छ भारत, विकसित भारत

भिलाई नगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा छत्तीसगढ़ शासन के निर्देशानुसार स्वच्छता ही सेवा अभियान 2026 का आयोजन दिनांक 17 सितम्बर 2026 से 17 अक्टूबर 2026 तक किया जा रहा है। इस वर्ष यह अभियान स्वच्छता में सहभाग, स्वच्छ भारत, विकसित भारत के प्रसंग पर जन-जागरूकता एवं जन-भागीदारी को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एक माह तक संचालित होगा। अभियान के प्रमुख कार्यक्रम - 17-18 सितम्बर - स्वच्छ पाठशाला युवा और स्वच्छता: SBM Rules 2026 एवं आर आर पर जागरूकता, स्वच्छता ज्ञान यात्रा (स्कूल विद्यार्थियों को SBM परिसंपत्तियों का भ्रमण), RRR के तहत दान अभियान, टोल प्लास्टिक फ्री कला प्रतियोगिता एवं दीप जलाकर स्वच्छ रंगोली के माध्यम से अभियान चलाया जायेगा। 19-20 सितम्बर - CTUs का रूपांतरण: CTUs/GVPs का चिन्हित स्थल में सफाई एवं सौंदर्यीकरण, जनप्रतिनिधियों, युवाओं, NGOs, CSOs की सहभागिता होगी। 21-22 सितम्बर - स्वच्छ सार्वजनिक स्थल: रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, बाजार, हाट परिसर में स्वच्छता अभियान, अपना कचरा साफलाओ अभियान, गुटखा पान मसाला मुक्त अभियान चलाया जायेगा।

दस लक्षण महापर्व पर उत्तम क्षमा धर्म मनाया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। दिगंबर जैन समाज का परवाधीराज पर्युषण पर्व बुधवार 16 सितंबर से प्रारंभ हुए. कचना, अमलतास केवल स्तिथ 1008 श्री मुनि सुब्रत नाथ दिगंबर जैन मंदिर में दस दिवसीय महापर्व के प्रथम दिवस उत्तम क्षमा धर्म मनाया गया. जिसके अंतर्गत श्री जी को पाण्डुक शीला पर विराजित कर अभिषेक व शांति धारा नित्य पूजन के पश्चात दस लक्षण विधान की आराधना की गई...

उत्तम क्षमा धर्म पर विशेष आध्यात्मिक जानकारी देते हुए भाई सुरेश मोदी ने बताया कि अपमान ,दुर्व्यवहार या कष्ट पहुंचाने पर भी मन में क्रोध या बदले की भावना मन में ना लाना उत्तम क्षमा धर्म है. सहनशीलता और क्षमा भाव आत्मा का मूल और आंतरिक गुण है, जबकि क्रोध बाहरी और विकृत भाव है. क्षमा करना कमजोर व्यक्ती की विवशता नहीं परन्तु बलवान और वीर मनुष्यों का आभूषण माना जाता है. क्षमा करने से हृदय में शीतलता और आंतरिक आनंद की अनुभूति होती है. जबकि प्रतिशोध की भावना मन को अशांत करती है. प्रतिकूल परिस्थितियों को सहज भाव से सहन करने पर पुराने कर्मों की निर्जरा(विनाश)का नाश होता है. उपरोक्त दस दिवसीय पर्युषण पर्व के प्रथम दिवस प्रात: 7-30 बजे समाज सेविका, सुश्राविका श्रीमती गरिमा पालीवाल जी के द्वारा मंदिर परिसर में ध्वजा रोहन किया गया।

क्रोध को हवा में उड़ाने का हुनर सीखने की आवश्यकता: मुनि श्रमण सागर जी

■ उत्तम क्षमा धर्म पर मंगल प्रवचन

■ श्रवण संस्कार शिविर का भव्य शुभारंभ।

राघौगढ़ (विश्व परिवार)। जैन धर्म के दस लक्षण महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म पर मंगल प्रवचन करते हुए महान तपस्वी, औजस्वी वक्ता बुंदेली महाकवि मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने कहा, करना है तो गुस्से पर गुस्सा करो, गुस्सा करने वाले पर नहीं। क्रोध मूर्खता से उत्पन्न होता है ।जिस समय क्रोध आता है आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है। अगर क्रोध पर नियंत्रण नहीं किया तो जिंदगी भर क्रोध के कारण दुख सहना पड़ेगा। मुनिराज ने एक परिवार का उदाहरण देते हुए कहा उस परिवार में लॉटरी में एक लाख रुपए मिले। बेटा छोटा अबोध था। उसने एक गड्डी चूल्हे में डाल दी। बेटे की गलती देखकर मां ने बेटे को चूल्हे से जलती लकड़ी निकाल कर जला दिया। वह लड़का कुछ देर में मर गया। गुस्से में मां ने बेटे की हालत देखकर दूसरी गड्डी भी चूल्हे में डाल दी। यह देखकर पति को क्रोध आया और उसने जलती लकड़ी से पत्नी को जलाकर मार दिया और वह व्यक्ति स्वयं भी परिवार के साथ मर गया। क्रोध के कारण परिवार नष्ट हो जाते हैं। परिवार जीवन भर दुखी हो जाता है। आपने यह भी कहा समझदार व्यक्ति वह होता है जो अपने ज्ञान से कम और पड़ोसी के अनुभव से ज्यादा सीखना है धर्म सभा में आपने सभी को आव्हान किया कि अस्पताल के अग्नि पीड़ित उपचार वार्ड के खाली पलंग का फोटो खींचकर अपने घर पर लगाये।उस फोटो को देखकर यह आभास होगा कि अगर हमने क्रोध पर नियंत्रण नहीं किया तो एक दिन हमारी भी वही स्थिति होगी। हमें आज के ही दिन उत्तम क्षमा धर्म को धारण नहीं करना है बल्कि 365 दिन उत्तम क्षमा को धारण करने का यह पर्व है।

राघौगढ़ में चातुर्मास कर रहे मुनि श्रमण सागर जी, मुनि ओंकार सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में दस लक्षण महापर्व के पावन अवसर पर 20 युवक जिनकी आयु 15 से 30 वर्ष है उन्हें 10 दिन के विद्याधर बनाकर धर्म साधना करने का अनूठा प्रयास किया जा रहा है।

इनमें 16 युवक देश के विभिन्न नगरों से आये हैं।4 युवक राघौगढ़ के हैं।साथ ही श्रावक श्राविकाओं को श्रमण संस्कार शिविर के माध्यम से लगभग 110 को धार्मिक संस्कार मुनि संघ के पावन सानिध्य में दिए जा रहे हैं। दस लक्षण पर्व के शुभारंभ के अवसर पर प्रात: 5 से ध्यान की क्लास, 5:45 बजे गुरु भक्ति, 6:15 बजे से भगवान का अभिषेक शांति धारा एवं सामूहिक पूजन हुई, सभी मांगलिक क्रियाएं श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर से पधारे अनिकेत शास्त्री जी ने संगीत की सुमधुर ध्वनि के बीच संपन्न करायी।गोटेगांव से सुप्रसिद्ध भजन गायिका सुश्री अंकिता जैन संगीत पार्टी के साथ पधारी हैं। शिविर के पुण्यार्जक परिवार सिंघई अशोक कुमार राजेश कुमार अमित कुमार भारिल्य परिवार ने मुनि द्वय के चरणों में श्री फल भेंटकर आशीर्वाद लिया।

पर्यूषण पर्व के प्रथम दिवस उत्तम क्षमा धर्म की आराधना, श्रद्धालुओं ने उत्साह से लिया भाग

बलौदा बाजार (विश्व परिवार)। जैन समाज द्वारा दस दिवसीय दशलक्षण पर्यूषण पर्व का शुभारंभ धार्मिक उत्साह एवं भक्तिभाव के साथ किया गया। पर्यूषण पर्व के प्रथम दिवस उत्तम क्षमा धर्म की आराधना की गई। समाज के लोगों ने बड़ी संख्या में मंदिर पहुंचकर पूजा-अर्चना, अभिषेक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

जैन धर्म में मनाए जाने वाले दशलक्षण धर्म में प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म का विधान है। यह दिन मनुष्य को क्रोध का त्याग कर क्षमा, शांति और मैत्री का भाव अपनाने की प्रेरणा देता है। उत्तम क्षमा धर्म के माध्यम से अपने भीतर के क्रोध और कषायों को शांत कर आत्मा की शुद्धि की भावना की जाती है। इसी क्रम में पर्यूषण पर्व के प्रत्येक दिन एक-एक उत्तम धर्म की आराधना की जाती है।

पर्यूषण पर्व के दसों दिनों के लिए मंगल कलश एवं मंगल दीपक रखने का सौभाग्य दिनेश-निश्चल छाबड़ा परिवार को प्राप्त हुआ। वहीं प्रथम चार मंगल कलश से श्रीजी का अभिषेक करने का सौभाग्य संजय पाटनी, अजेश पाटनी, दिनेश छाबड़ा एवं सुभाष छाबड़ा को प्राप्त हुआ।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर, गुरूवार 17 सितंबर 2026

बूथ-बूथ पहुंचेगा सेवा संकल्प, 17 सितंबर को हर बूथ पर जलेंगे दीप

मोदी के जन्मदिवस को सेवा गतिविधियों से जोड़ने भाजपा बस्तर मंडल ने बनाई रणनीति

बस्तर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस 17 सितंबर को भाजपा बस्तर मंडल बूथ स्तर पर सेवा संकल्प अभियान के रूप में मनाएगा। अभियान की तैयारियों को लेकर नगर पंचायत बस्तर में मंडल पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। इसमें कार्यक्रम को केवल औपचारिक आयोजन तक सीमित रखने के बजाय प्रत्येक बूथ तक संगठन की सक्रियता पहुंचाने पर जोर दिया गया।बैठक में तय किया गया कि 17 सितंबर को बस्तर मंडल के सभी बूथों पर दीप प्रज्ज्वलन किया जाएगा। इसके साथ ही सेवा संकल्प से जुड़ी गतिविधियों के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन के 25 वर्षों की यात्रा और केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाई जाएगी।बैठक में बूथों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा गया कि संगठन की मजबूती का आधार बूथ स्तर का कार्यकर्ता है। ऐसे में अभियान के दौरान बूथ पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के बीच बेहतर समन्वय के साथ योजनाओं का संदेश समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा।पदाधिकारियों ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के सार्वजनिक जीवन में सेवा, सुशासन और राष्ट्रहित को प्रमुखता मिली है। सेवा संकल्प अभियान के जरिए इन कार्यों और योजनाओं को लेकर लोगों के बीच संवाद बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। इसके लिए मंडल स्तर से बूथवार तैयारियों पर नजर रखने और कार्यकर्ताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने पर भी चर्चा हुई। बैठक में मंडल अध्यक्ष सुखदेव मंडावी, जिला पंचायत सदस्य शकुंतला कश्यप, पूर्व जिला उपाध्यक्ष मनीराम कश्यप, पूर्व मंडल अध्यक्ष उदबो राम नाग, पार्षदगण सहित भाजपा मंडल के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

गोचर भूमि खाली करनी चाहिए सभी को जहां गौमाता सुख से रह सके : शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी

बेमेतरा। जिला के ग्राम सलधा जहां सवा लाख शिवलिंग का ऐतिहासिक मंदिर बन रहा है वहीं उत्तराम्नाय ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनंत श्री विभूषित स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज का दिव्य भव्य चातुर्मास चल रहा है। सर्व प्रथम समस्त ग्रामवासी गोता माटरा के द्वारा पादुका पूजन किया गया। दण्डी स्वामी ज्योतिर्मयानंद सरस्वती जी महाराज ने सलधा शिवलिंग स्थापित करने वाले भक्तों के नाम की घोषणा की। अप्रमेय स्वामी जी ने विरुदावली का वाचन किया। परम पूज्य शंकराचार्य जी ने कहा की धर्म यद्यपि हमारे अंदर प्रविष्ट करा के भेजा गया है हम सब धार्मिक हैं शायद कोई अधार्मिक हो । जो उत्थान चाहता है वो धार्मिक है। धर्म से उत्थान होता है और अधर्म से पतन। जो चीज हमको गिराती है उससे बच के रहें। इसलिए पाप को समझना होगा। 18 पुराण और 18 उप पुराण है। 36 हो गये। हमारा छत्तीसगढ़ है। श्री व्यास जी कहते हैं कि 18 पुराणों से दो बार व्यास भगवान ने कही कि पुण्य करो और पाप से बचो। पाप का अर्थ क्या है बच के रहो पाप से। इसे ही धर्म-अधर्म, शुभ-अशुभ भी कहते हैं। धर्म ऐच्छिक नहीं है मानना होगा यदि पाप से बचना है तो धर्म को मानन ही पड़ेगा बिना धर्म माने पाप से बच नहीं सकते। महाभारत में आया जो धर्म को मारता है धर्म उसे मारता है जो धर्म पालन के द्वारा धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। इसलिए धर्म की उपेक्षा मत करो धर्म का पालन करो। पुण्य याने पवित्रता, परोपकार। पाप और पुण्य तीन प्रकार का होता है कायिक, वाचिक और मानसिक। चार प्रकार के कायिक पाप है पहला है अभक्ष्य भक्षण गलत चीज मत खाओ, जैसा अन्न वैसा मन गलत खाने से इसलिए रोका जाता है कि गलत खाने से मन और बुद्धि खराब हो जाती है गलत बुद्धि से गलत निर्णय होगा जिसका प्रभाव समाज में होगा समाज को दुख मिलेगा इसलिए गलत खाने से रोका जाता है। दूसरे की हिंसा मत करो, व्यभिचार मत करो, चोरी मत करो चोरी करना बड़ा पाप है क्योंकि धन को शरीर का बाहरी प्राण कहा जाता है। वाचिक पाप बिना मतलब फालतु नहीं बोलना चाहिए, असत्य नहीं बोलना चाहिए, किसी को कष्ट मिले ऐसा ना बोले, किसी की भी निंदा चुगली नहीं करनी चाहिए।

इंडसइंड बैंक ने फिटनेस के बढ़ते जुनून के बीच हायरॉक्स इंडिया के साथ अपनी भागीदारी का किया विस्तार

मुंबई: इंडसइंड बैंक ने हायरॉक्स मुंबई (2026) के साथ अपनी सफल साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए हायरॉक्स इंडिया के साथ अपनी भागीदारी का विस्तार किया है, जिसमें अब अहमदाबाद, बेंगलुरु और नोएडा जैसे कई शहर शामिल हैं। बैंक इस विस्तार के साथ फिटनेस के शौकीनों और नए अनुभव प्राप्त करने के इच्छुक ग्राहकों के साथ अपना जुड़ाव मज़बूत करना चाहता है। इंडसइंड बैंक अपने ग्राहकों को इन आयोजनों से जुड़े विभिन्न किस्म के विशेष कैशबैक ऑफर और रेस-डे पर कई तरह के लाभ भी प्रदान करेगा, जैसे प्रायोरिटी चेक-इन, डेडिकेटेड एक्सेस लेन, इवेंट से जुड़ी विशेष सुविधाएं तथा विशेष ऑन-ग्राउंड अनुभव। इंडसइंड बैंक की मुख्य विपणन अधिकारी (चीफ मार्केटिंग ऑफिसर), शेरन मेहरा ने इस भागीदारी के बारे में कहा, हायरॉक्स, इंडसइंड बैंक को ऐसी पीढ़ी से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है जो महत्वाकांक्षा, दृढ़ता और निरंतर तरक्की को अहमियत देती है। इसका आकर्षण सिर्फ फिटनेस तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सीमा को चुनौती देने और व्यक्तिगत विकास की ओर बढ़ने की सोच को भी दिखाता है। ये ऐसे गुण हैं जो हमारे ब्रांड की सोच से पूरी तरह मेल खाते हैं। इसलिए यह भागीदारी सिर्फ खेलों से जुड़ाव नहीं है, बल्कि यह रणनीतिक प्लेटफॉर्म है जिसके ज़रिए हम अपनी अहमियत बढ़ा सकते हैं, विशेष अनुभव प्रदान कर सकते हैं और उन ग्राहकों के जीवन का हिस्सा बन सकते हैं जो हमेशा कुछ नया और बेहतर करने की कोशिश में रहते हैं। हायरॉक्स इंडिया के कंट्री हेड, दीपक राज ने इस भागीदारी पर अपनी टिप्पणी में कहा, हायरॉक्स का मूल दृष्टिकोण महत्वाकांक्षा और कुछ बड़ा हासिल करने के जज़्बे पर आधारित है। इंडसइंड बैंक की सोच भी वैसी ही है। बैंक हर दिन ग्राहकों को अपने लक्ष्य हासिल करने में मदद करता है।

नौकरी के नाम पर ठगी का जाल, बीजापुर पुलिस ने युवाओं को किया सतर्क

बीजापुर। नौकरी दिलाने का झांसा देकर साइबर ठगी करने वालों से युवाओं और श्रमिकों को सावधान करने बीजापुर पुलिस ने जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में जागरूकता अभियान शुरू किया है। साइबर जागृति अभियान के पांचवें सप्ताह में 13 से 19 सितंबर तक जॉब फ्रॉड और फिशिंग के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि ठग फर्जी नौकरी के विज्ञापन, ऑनलाइन जॉब ऑफर और भर्ती एजेंसी के नाम पर रजिस्ट्रेशन, वेरिफिकेशन या नौकरी लगवाने के लिए पैसे मांग सकते हैं। ऐसे ऑफर पर भरोसा करने से पहले संबंधित कंपनी या संस्था की जानकारी उसके आधिकारिक स्रोत से जांचने की सलाह दी गई है।

पुलिस ने अनजान लिंक पर क्लिक नहीं करने और ओटीपी, बैंक डिटेल, एटीएम पिन व यूपीआई पिन किसी से साझा नहीं करने की अपील की है।

करंजी उचित मूल्य दुकान में चार माह से गुड़-चना नहीं मिलने का आरोप

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने किया विभाग से जांच और शीघ्र वितरण की मांग

कोण्डागांव -कोंडागांव। ग्राम पंचायत करंजी स्थित शासकीय उचित मूल्य दुकान का ब्लॉक कांग्रेस कमेटी कोंडागांव के अध्यक्ष संजय करन के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जानकारी ली, इस दौरान हितग्राहियों से चर्चा में पिछले चार माह से गुड़ एवं चना का वितरण नहीं होने की बात सामने आने का दावा किया गया।कांग्रेस नेताओं ने कहा कि शासन द्वारा गरीब एवं जरूरतमंद परिवारों के लिए खाद्य सामग्री उपलब्ध कराई जाती है, ऐसे में लंबे समय से गुड़-चना नहीं मिलने से हितग्राहियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने संबंधित विभाग से मामले की जांच कर लंबित खाद्य सामग्री का शीघ्र वितरण सुनिश्चित करने की मांग की।ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष संजय करन ने कहा कि हितग्राहियों को उनके अधिकार की खाद्य सामग्री समय पर मिलनी चाहिए। यदि वितरण में किसी प्रकार की लापरवाही अथवा अनियमितता हुई है तो इसकी जांच कर जिम्मेदारों के विरुद्ध उचित कार्रवाई की जानी चाहिए। इस दौरान कांग्रेस के स्थानीय पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता तथा बड़ी संख्या में हितग्राही उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना से बीजापुर में 66 हजार से अधिक मरीजों का उपचार

बीजापुर । मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना के तहत बीजापुर जिले के तीनों नगरीय निकायों-बीजापुर, भैरमगढ़ और भोपालपटनम में मोबाइल मेडिकल यूनिट के माध्यम से लोगों को घर के नजदीक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। जिले में संचालित मोबाइल मेडिकल यूनिट महीने में 24 दिन अलग-अलग वार्डों और मोहल्लों में पहुंचकर स्वास्थ्य शिविर आयोजित करती है। सीएमओ बंसी लाल नूरूटी से मिली जानकारी के अनुसार अब तक जिले में 1,255 स्वास्थ्य शिविर लगाए जा चुके हैं, जिनमें 66,639 मरीजों का उपचार किया गया। वहीं 27,388 लोगों के 39,215 प्रकार के स्वास्थ्य परीक्षण किए गए तथा 63,223 लोगों को निःशुल्क दवाइयां उपलब्ध कराई गई।योजना के तहत सोमवार और मंगलवार को भोपालपटनम, गुरुवार और शुक्रवार को भैरमगढ़ तथा शनिवार और रविवार को बीजापुर में शिविर लगाए जाते हैं। रविवार को बीजापुर के साप्ताहिक बाजार में विशेष कैंप लगाया जाता है, ताकि अधिक से अधिक लोगों को स्वास्थ्य सुविधा मिल सके। इसके अलावा पुलिस कॉलोनी, छात्रावास, बालगृह और पुनर्वास केंद्रों में भी शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

नशे में सड़क किनारे अचेत मिला युवक, 112 टीम ने लौटाए 10 हजार रुपये

गरियाबंद (विश्व परिवार)। गरियाबंद पुलिस की 112 टीम ने नशे की हालत में सड़क किनारे अचेत पड़े युवक की मदद कर न केवल उसकी जान की चिंता की, बल्कि उसकी जेब से मिले 10 हजार रुपये भी सुरक्षित रखकर परिजनों को ईमानदारी से सौंप दिए। पुलिसकर्मियों की इस पहल की स्थानीय स्तर पर सराहना हो रही है।

गरियाबंद पुलिस ने एक बार फिर मानवता और ईमानदारी की मिसाल पेश की। मामला मैनपुर थाना क्षेत्र के गिरहोला निवासी देवकुमार फरस से जुड़ा है, जो अपने पिता के साथ बैंक से पैसे निकालने गरियाबंद आया था।

जानकारी के अनुसार, देवकुमार ने एसबीआई बैंक से पैसे निकालने के बाद अपने पिता को नगर में किसी अन्य स्थान पर छोड़ दिया और शराब पीने के लिए शराब दुकान की ओर चला गया। अधिक नशा होने के कारण वह रास्ते में ही अचेत अवस्था में सो गया। राहगीरों की नजर जब सड़क किनारे पड़े युवक पर पड़ी तो उन्होंने तत्काल 112 पर सूचना दी। सूचना मिलने पर 112 वाहन की टीम मौके पर पहुंची। टीम में वाहन क्रमांक 790 के राजेंद्र रात्रे, 376 के धनेन्द्र बंजारे, रामानंद निषाद और भानुप्रताप ठाकुर शामिल थे।

युवक की स्थिति को देखते हुए टीम ने उसकी पहचान और परिजनों की जानकारी जुटाने के लिए तलाशी ली। इस दौरान उसकी जेब से 10 हजार रुपये बरामद हुए। पूछताछ और पहचान के आधार पर युवक की पहचान देवकुमार फरस, निवासी गिरहोला, थाना मैनपुर के रूप में हुई।

इसके बाद 112 टीम ने संबंधित थाना पुलिस से संपर्क कर देवकुमार के परिजनों को सूचना दी। परिजनों के पहुंचने पर पुलिसकर्मियों ने बरामद 10 हजार रुपये उनके समक्ष सुरक्षित रूप से सौंप दिए। 112 टीम के इस कार्य ने पुलिस के मानवीय और जिम्मेदार चेहरे को सामने रखा। पुलिसकर्मियों की ईमानदारी और संवेदनशीलता की क्षेत्र में सराहना की जा रही है।

हर घर नल से जल : बस्तर के बेसरापाल में साकार हुआ जल जीवन मिशन

111 परिवारों को मिला शुद्ध पेयजल

जगदलपुर/ जल जीवन मिशन के अंतर्गत बस्तर ब्लॉक की ग्राम पंचायत सेमलनार के आश्रित ग्राम बेसरापाल ने ग्रामीण विकास और जनसुविधा की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। कुल तीन वार्डों में फैले इस गांव के सभी घरों तक नल के जरिए शुद्ध और सुरक्षित पेयजल पहुंचाकर ग्रामीणों को जल संकट से पूरी तरह मुक्ति दिला दी गई है।

योजना के तहत गांव के सभी 111 परिवारों को फंक्शनल हाउसहोल्ड टैप कनेक्शन से जोड़ा गया है। जलापूर्ति को नियमित और बिना किसी बाधा के जारी रखने के लिए यहां 40 हजार लीटर क्षमता की विशाल पानी टंकी स्थापित की गई है, जिसका संचालन पंप ऑपरेटर रमेश मौर्य पूरी तत्परता से संभाल रहे हैं। आपातकालीन स्थितियों को ध्यान में रखते हुए गांव में दो हैंडपंप भी पूरी तरह कार्यशील रखे गए हैं।

घरों के साथ-साथ गांव के दोनों आंगनबाड़ी केंद्रों में भी नल कनेक्शन देकर बच्चों के लिए स्वच्छ जल का प्रबंध किया गया है। जल की गुणवत्ता और शुद्धता पर पैनी नजर रखने के लिए गांव की सक्रिय महिलाओंकृमिटकी कश्यप, उर्मिला कश्यप और सुमनी मौर्य को निगरानी की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जो फील्ड टेस्ट किट के माध्यम से समय-समय पर पानी के नमूनों की जांच करती हैं।

सरपंच उर्मिला कश्यप ने इस पर प्रसन्नता व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि ग्रामीणों को अब पानी के लिए कहीं जाना नहीं पड़ेगा और लाइन नहीं लगानी पड़ेगी। उन्हें घर में ही पीने का साफ पानी मिल जाएगा। इससे विशेषकर महिलाओं को अब दूर-दराज से पानी ढोने की मशक्कत से राहत मिल गई है, जिससे पूरे गांव में स्वास्थ्य, स्वच्छता और जीवन स्तर में एक सकारात्मक बदलाव साफ दिखाई दे रहा है।

मोपकी में तीज मिलन समारोह में शामिल हुए विधायक साव, त्योहार की खुशियाँ बांटीं और क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की

बलौदा बाजार। ग्राम मोपकी में छत्तीसगढ़ का पारंपरिक और लोक संस्कृति से सराबोर तीज मिलन समारोह अत्यंत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस गरिमामयी कार्यक्रम में विधायक इन्द्र साव मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने ग्रामवासियों के साथ मिलकर त्योहार की खुशियाँ बांटीं और क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की। संबोधित करते हुए विधायक इन्द्र साव ने तीजा-पोरा त्योहार के सांस्कृतिक महत्व और इससे जुड़ी अटूट आस्था पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पोरा और तीजा का त्योहार छत्तीसगढ़ की माटी की महक, कृषि परंपरा और मातृशक्ति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। यह पर्व हमारे अन्नदाताओं और कृषि संस्कृति से जुड़ा है। यह त्योहार हमारी माताओं-बहनों के त्याग, तपस्या और अखंड सौभाग्य की कामना का प्रतीक है। छत्तीसगढ़िया संस्कृति में बेटियाँ इस अवसर पर अपने मायके आती हैं, जहाँ उनका पारंपरिक रूप से आदर-सत्कार किया जाता है। यह त्योहार परिवारों के बीच आपसी प्रेम और सामाजिक समरसता को मजबूत करता है। इस पावन अवसर पर विधायक इंद्र साव ने आदिवासी समाज की वर्षों पुरानी और बहुप्रतीक्षित मांग को पूरा करते हुए सामुदायिक भवन निर्माण कार्य का विधि-विधान से भूमिपूजन किया। भूमिपूजन के बाद उन्होंने कहा कि यह भवन केवल एक संरचना नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, बैठकों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक प्रमुख केंद्र बनेगा। समाज के विकास के लिए बुनियादी सुविधाओं का होना बेहद जरूरी है और वे क्षेत्र के हर वर्ग के उत्थान के लिए निरंतर प्रतिबद्ध हैं। समाज के नागरिकों ने सामुदायिक भवन की सौगात मिलने पर विधायक इंद्र साव का आभार व्यक्त किया। तीज मिलन समारोह के दौरान भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी लोक गीतों तथा पारंपरिक नृत्यों की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं, जिससे पूरा माहौल उत्सव के रंग में सराबोर हो गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीकांत मरकाम अध्यक्ष आदिवासी युवा प्रभाद ने किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से अमर सिंह मंडावी जिला पंचायत सदस्य, जित्तू ठाकुर विधायक प्रतिनिधि, विशिष्ट अतिथि सरपंच अहिल्या कामता ध्रुव, उप सरपंच गीता श्यामरतन निषाद, जनपद सदस्य अगेश्वर ध्रुव, पुसउ मरकाम, मंडल अध्यक्ष कोमल साहू, देवसिंग ध्रुव, मोहन जगत, फिरंता ध्रुव, लीलाराम मरकाम संरक्षक, चैनू जगत सचिव सहित समाज के प्रमुख पदाधिकारी ग्रामीणजन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री का जन्मदिन सेवा संकल्प के बजाय बेरोजगारी, महंगाई, वादाखिलाफी व किसान धोखा दिवस के रुप में मनाए- सुशील मौर्य

जगदलपुर। आज संभाग मुख्यालय राजीव भवन जगदलपुर में बस्तर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित प्रेसवार्ता को शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुशील मौर्य ने ग्रामीण अध्यक्ष प्रेमशंकर शुक्ला व कांग्रेस पदाधिकारियों की उपस्थिति में संबोधित करते हुए कहा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन सेवा संकल्प के बजाय बेरोजगारी,महंगाई, वादाखिलाफी व किसान धोखा दिवस के रुप में भाजपा को मनाया जाना चाहिए।भाजपा द्वारा मोदी के जन्मदिन और सत्ताधीश के रूप में उनके 25 वर्ष को सेवा और समर्पण के रूप में मनाया जाना देश का सबसे बड़ा झूठ है।मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में मोदी के कार्यकाल विवादों और असफलता से भरे रहे है।मोदी के कार्यकाल को सेवा जतन के रूप में मनाना भाजपा का जनता से क्रूर मजाक है।भाजपा को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जन्मदिन सेवा संकल्प के बजाय बेरोजगारी दिवस, महंगाई दिवस, वादाखिलाफी दिवस, किसान दगा दिवस, अनुचित नोटबंदी दिवस, अव्यवहारिक जीएसटी दिवस,जुमला दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिये।

शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुशील मौर्य ने कहा मोदी की विफलताएं :-वादा किये थे 100 दिन में महंगाई कम होगा, नहीं हुआ।हर साल 2 करोड़ रोजगार मिलेगा, नहीं मिला।हर घर तक नल, हर सिर पर छत, नहीं हो रहा।हवाई चप्पल वाले हवाई जहाज में सफर करेंगे, काला धन आयेगा, कालाधन वाले विदेश। चले गये। पूंजीपतियों के लाखों करोड़ के लोन राइट ऑफ किए गए।सभी को 15-15 लाख मिलेंगे।किसानों की आय दुगनी होगी, स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश के अनुसार सो-2 फार्मूले पर एमएसपी तय होगा।उल्टे मुखमरी, गरीबी, बेकारी बढ़ गई।आस्था पर चोट, चढ़ावा चोरी।पेपर लीक हो रहा, बच्चें परेशान है।श्रमिकों के हित के 27 श्रम कानूनों को बिना सदन में चर्चा कराए खत्म किया,वन अधिकार अधिनियम को कमजोर किया,देश के संसाधन सार्वजनिक उपक्रमों को अपने पूंजीपति मित्रों को बेच दिया,ई-20 पेट्रोल जैसे मिलावट और मुनाफाखोरी ही मोदी की उपलब्धि है।डबल इंजन सरकार में मणिपुर पिछले तीन साल से दंगों और लिंचिंग की आग में जल रहा है, इस पर भाजपाइयों के मुंह से एक शब्द नहीं निकल रहा है।नोटबंदी (2016): काले धन को खत्म करने का दावा असफल रहा; 99 प्रतिात से अधिक नकदी बैंकों में वापस आ गई और छोटे उद्योगों को भारी नुकसान पहुंचा।गलत तरीके से जीएसटी का क्रियान्वयनः जटिल कर संरचना और लगातार बदलावों के कारण छोटे और मध्यम कारोबारियों (स्वस्थ्य) को भारी झटका लगा।कोविड का मिश मैनेजमेंट, गंगा में तैरतो लाशें, संवैधानिक संस्थानों और जांच एजेंसियों के दुरुपयोग पर पर्दा डालने का 'प्रचार इवेंट' है।2014 में डीजल पर मात्र 3 रुपया 56 पैसा प्रति लीटर की दर से सेंट्रल एक्साइज लगता था, मोदी सरकार ने 10 गुना बढ़ाकर 31 रुपए 83 पैसा प्रति लीटर किया है,

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, गुरुवार 17 सितम्बर 2026

जब हुनर को मंच और अनुभव को अवसर मिलता है, तब बदलता है भविष्य

■ एनएसटीआई से मिलेगी कौशल को नई पहचान, 45 वर्ष की आयु सीमा से अनुभव को लाभ-मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में अवसरों का विस्तार

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ की पहचान लंबे समय तक 'धान के कटोरे' के रूप में रही है। खेतों में लहलहाती फसलें प्रदेश की समृद्धि की कहानी कहती हैं, लेकिन बदलते समय के साथ छत्तीसगढ़ ने विकास की अपनी यात्रा में नए आयाम जोड़े हैं। अब कृषि के साथ उद्योग, तकनीक के साथ कौशल और रोजगार के साथ उद्यमिता भी प्रदेश की नई पहचान बन रही है। इस बदलाव की सबसे बड़ी ताकत प्रदेश के युवा और अनुभवी मानव संसाधन हैं।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में मंत्रिपरिषद के हालिया निर्णय इसी सोच को आगे बढ़ाते दिखाई देते हैं। एक ओर नवा रायपुर अटल नगर में नेशनल स्किल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (एनएसटीआई) की स्थापना होने से युवाओं को आधुनिक कौशल का मंच मिलेगा, वहीं दूसरी ओर विभिन्न शासकीय एवं संबद्ध संस्थाओं में कार्यरत वर्गों के लिए अधिकतम आयु सीमा 38 से बढ़ाकर 45 वर्ष किया जाना अनुभव और क्षमता को नए अवसर देने की दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय है।

सपनों को डिग्री के साथ हुनर भी चाहिए

आज का युवा केवल शिक्षा नहीं, रोजगारपरक कौशल चाहता है। उद्योगों की बदलती जरूरतों के बीच ज्ञान के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण का महत्व बढ़ गया है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ग्राम तेंदुवा में एनएसटीआई की स्थापना के लिए भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमशीलता निदेशालय को 10 एकड़ भूमि नि:शुल्क आवंटित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है।

करीब 200 करोड़ रुपये की लागत से विकसित होने वाले इस संस्थान में आधुनिक शैक्षणिक, प्रशासनिक और छात्रावास सुविधाएं होंगी। यहां दीर्घकालीन पाठ्यक्रमों में हर वर्ष करीब एक हजार तथा अल्पकालीन कार्यक्रमों में लगभग तीन हजार प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण दिया जा सकेगा। हजारों युवाओं के सपनों से जुड़ा अवसर है। इससे कोई तकनीकी कौशल हासिल करेगा, कोई उद्योग से जुड़ेगा, तो कोई अपना उद्यम शुरू कर दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करेगा।

कौशल से रोजगार और आत्मनिर्भरता की राह

एनएसटीआई की स्थापना होने से युवाओं को प्रशिक्षण के साथ बदलती तकनीक और उद्योग की जरूरतों से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल होगी। आज कौशल केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर बनने की क्षमता है। गांव और कस्बे के युवा को भी उद्यमशील बनने का अवसर मिलेगा। एक प्रशिक्षित युवा नौकरी तलाशने वाला बनने के साथ नौकरी देने वाला उद्यमी भी बन सकता है। यही कौशल से उद्यमिता और रोजगार से आत्मनिर्भरता की यात्रा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी देश के युवाओं से अक्सर कहते हैं कि ऐसा कार्य करें जो युवाओं को रोजगार देने वाला बने, ताकि उनकी नई पहचान बन सके।

उम्र बढ़ी तो अवसरों का दायरा भी बढ़ा

अधिकतम आयु सीमा को 38 से बढ़ाकर 45 वर्ष करने का निर्णय उन लोगों के लिए नई संभावनाएं लेकर आया है, जिनके पास अनुभव, कार्यकुशलता और जिम्मेदारियों का व्यावहारिक ज्ञान है। उम्र बढ़ने के साथ अनुभव बढ़ता है और अनुभव किसी भी व्यवस्था की महत्वपूर्ण पूंजी है। वर्षों तक काम कर चुके लोगों ने व्यवस्था को करीब से समझा है और चुनौतियों का सामना किया है। ऐसे अनुभव का बेहतर उपयोग नई जिम्मेदारियों में किया जाना संस्थाओं को अधिक सक्षम बना सकता है।

बच्चे भारत के भविष्य हैं, उन्हें संस्कार और अच्छी सोच देना, हम सभी की जिम्मेदारी : पुरन्दर मिश्रा

■ नीम करौली बाबा की जीवनगाथा से परिचित हुईं छात्राएं, पुरन्दर मिश्रा ने देखी 'हनुमान अंश'

रायपुर (विश्व परिवार)। पंडरी स्थित सिटी सेंटर मॉल के थिएटर में रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के विधायक पुरन्दर मिश्रा ने संत गोविंदराम शदाणी शासकीय कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर की छात्राओं एवं भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ 'हनुमान अंश' फिल्म देखी। इस अवसर पर उन्होंने युवाओं को अच्छी, प्रेरणादायी एवं संस्कारपूर्ण फिल्में देखने के लिए प्रोत्साहित किया।

श्री पुरन्दर मिश्रा ने कहा कि 'हनुमान अंश' फिल्म नीम करौली बाबा की जीवनगाथा एवं उनके आध्यात्मिक संदेशों को प्रस्तुत करती है। फिल्म के माध्यम से नई पीढ़ी को आध्यात्मिकता, सेवा, सद्भाव और भारतीय आध्यात्मिक परंपरा से जुड़े विचारों को समझने का अवसर मिलता है।

उन्होंने कहा कि बच्चे और युवा भारत के भविष्य हैं। इसलिए उनके मनोरंजन के साथ-साथ उनके विचारों और संस्कारों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। माता-पिता से अपील करते हुए श्री मिश्रा ने कहा कि अपने जवान बच्चों को केवल डांटने के बजाय उन्हें समझें, उनकी बात सुनें और सही दिशा दिखाएं। बच्चों के साथ संवाद और विश्वास का वातावरण उन्हें सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

इस अवसर पर श्री पुरन्दर मिश्रा ने प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी का हृदय से आभार व्यक्त किया कि उन्होंने 'हनुमान अंश' फिल्म को टैक्स फ्री करने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि इससे अधिक से अधिक दर्शक इस फिल्म को देख सकेंगे और नीम करौली बाबा की जीवनगाथा एवं उनके आध्यात्मिक संदेशों से परिचित हो सकेंगे।

श्री मिश्रा ने भाजपा कार्यकर्ताओं, प्राचार्यों एवं शिक्षकगणों से भी अपील की कि वे विद्यार्थियों को ऐसी प्रेरणादायी एवं संस्कारपूर्ण फिल्मों के प्रति प्रोत्साहित करें। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति, आध्यात्मिक परंपराओं और सकारात्मक विचारों से जोड़ने में परिवार, शिक्षण संस्थानों और समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है।

मोतीपुर निवासी अजय महोबे जूता-चप्पल व्यवसाय कर हुआ आत्मनिर्भर

■ प्रधानमंत्री स्वनिधि स्ट्रीट वेंडर्स योजना अंतर्गत ऋण लेकर उठाया लाभ

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित प्रधानमंत्री स्वनिधि स्ट्रीट वेंडर्स योजना छत्तीसगढ़ शासन द्वारा संचालित योजना का लाभ लेने शहरी पथ विक्रेता ऋण लेकर स्वयं का व्यवसाय कर आत्मनिर्भर बन रहे है। राजनांदगांव निगम क्षेत्र के स्ट्रीट वेंडर्स भी इसका लाभ उठा रहे है।

मोतीपुर निवासी अजय महोबे को योजना की जानकारी मिलते ही उसने ऑनलाईन आवेदन कर पंजाब नेशनल बैंक से ऋण प्राप्त कर महावीर चैक के पास जूता-चप्पल का व्यवसाय शुरू किया। व्यवसाय करने अजय महोबे ने 10 हजार रूपये का प्रथम किश्त लिया। व्यवसाय में मुनाफा होने पर उन्होंने ऋण अदायगी कर द्वितीय किश्त 20 हजार रूपये ऋण लिया और व्यवसाय में लाभ होता देख द्वितीय किश्त जमा कर तृतीय किश्त 50 हजार रूपये ऋण लेकर अपने व्यवसाय में वृद्धि किए।

श्री अजय महोबे ने बताया कि उसे अपने परिवार का पालन पोषण करने में आर्थिक कठिनाई का सामना करना पडता था, बच्चों के पढ़ाई की चिन्ता रहती थी। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना से ऋण लेकर अपना जूता-चप्पल बेचने का काम शुरू किया, जिससे मुझे लाभ हुआ और मैं आत्मनिर्भर बन अपने परिवार का पालन पोषण कर रहा हूँ।

अपेक्स बैंक की 27 वी वार्षिक आमसभा आयोजित

■ अपेक्स बैंक को 40.86 करोड़ का लाभार्जन।

■ कोआपरेटिव बैंको में 1708 पदों की भर्ती की अनुमति मिला।

नवा रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी बैंक मर्यादित (अपेक्स बैंक) की 27 वी वार्षिक आम सभा आज दिनाँक 16.09.2026 को आयोजित हुआ। अपेक्स बैंक के प्राधिकृत अधिकारी श्री केदार नाथ गुप्ता द्वारा बैंक की वित्तीय पत्रक प्रस्तुत करते हुए कहा कि अपेक्स बैंक की अंशपूजी राशि 230.92 करोड़ से बढ़कर 245.14 करोड़, रक्षत निधियाँ (रिजर्व) 740.92 करोड़ से बढ़कर 808.48 करोड़,स्वयं की निधिया 460.85 करोड़ से बढ़कर 494.15 करोड़ हो गया। अमानत राशि 8653 करोड़, कार्यशील पूँजी 11901 करोड़ है। इस वर्ष अपेक्स बैंक 40.86 करोड़ लाभार्जन किया। श्री केदार गुप्ता ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि अपेक्स बैंक की वर्ष 2000 में मात्र 3 शाखाए थी जो अब बढकर 18 हो गई है। उन्होंने कहा कि डिजिटल लेन-देन को प्रोत्साहन देकर ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक बैंकिंग सुविधाओ की पहुँच सुनिश्चित की गई है। इसी तारतम्य में बैंक द्वारा माइक्रो एटीएम की अधिकतम आहरण सीमा 10000.00 से बढाकर 20000.00 तथा रुपे केसीसी की अधिकतम साख सीमा 20000.00 से बढाकर 40000.00 कर दी गई है। भविष्य में हम डिजिटल बैंकिंग को और सुलभ बनायेगे। अपेक्स बैंक द्वारा मोबाइल बैकिंग, यूपीआई, आईएमपीएस, आरटीजीएस तथा नेट बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अतिरिक्त बैंक ऐईपीएस/आधार बेस्ड बैंकिंग सेवा प्रारभ करेगी।

आमसभा में बैंक के प्राद्रीकृत अधिकारी श्री केदार गुप्ता ने जानकारी दी कि नेशनलाइज्ड बैंको व निजी बैंको की तरह अब अपेक्स बैंक व जिला सहकारी केंद्रीय बैंक बीमा का भी कार्य करेगी। इसके लिए रिजर्व बैंक से अनुमति प्रदान की गई है।

आमसभा मे बताया गया कि अपेक्स बैंक व जिला सहकारी बैंकों में 1708 पदों की भर्ती की अनुमति आयुक्त सहकारिता व पंजीयक से मिल गया है।

चरोदा में जलेगा 'आशीर्वाद का दीया'

भिलाई (विश्व परिवार)। 03 चरोदा निगम करेगा सेवा सकल्प अभियान कार्यक्रम का आयोजन। 17 सितबर से 17 अक्टूबर के बीच जनसेवा के प्रति आभार व्यक्त करना। विकसित भारत 2047 का सामूहिक सकल्प लेना साथ ही भारत शासन एवं राज्य शासन की जनकल्याणकारी योजनाओ की जानकारी जन-जन तक पहुंचाना रहेगा कार्यक्रम का उद्देश्य

छत्तीसगढ़ शासन जनसपर्क विभाग से प्राप्त निर्देश तथा जिला प्रशासन दुर्ग से यथा प्राप्त मार्गदर्शन के अनुरूप नगर पालिक निगम भिलाई चरौदा द्वारा पुरानी थाना भिलाई-03 परिसर में 'आर्शिवाद का दिया' प्रज्जवलित करने का कार्यक्रम दिनाक 17 सितंबर 2026 को मध्यान्ह काल की समाप्ति उपरांत से लेकर सायकाल तक किया जायेगा।

इसके पूर्व निगम कार्यालय मे सृजन के देवता भगवान विश्वकर्मा का पूजन किया जायेगा। निगम के सभी वाहनों और मशीनो का भी सम्मान सहित पूजन के पश्चात महापौर श्री निर्मल कोसरे, सभापति श्री कृष्णा चद्राकर एवं समस्त एमआईसी सदस्य सहित जनप्रतिनिधियों पार्षदों की उपस्थिति में कर्मवीरों का सम्मान भी किया जायेगा। निगम कमिश्नर श्री डी एस. राजपूत ने इस संबंध में सपूर्ण निगम क्षेत्रवासियों से अपील करते हुये कहा कि 'आर्शिवाद का दिया' कार्यक्रम की सफ्लता के लिए प्रत्येक घर से एक दीपक प्रज्जवलित कर कार्यक्रम को सफ्ल बनाये।

सेवा संकल्प अभियान का शुभारम्भ आज, घर घर जलेंगे आशीर्वाद के दीये

■ चौपाटी मे होगा जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन,सवा लाख दीयों से जगमग होगा चौपाटी

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 25 वर्षों के निर्बाध जनसेवा और समर्पण काल के पूर्ण होने के अवसर पर 17 सितंबर से 17 अक्टूबर 2026 तक जिले मे सेवा संकल्प अभियान चलाया जाएगा। 'सेवा संकल्प अभियान' का भव्य शुभारंभ 17 सितम्बर को 'आशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम से होगी।बलौदाबाजार स्थित चौपाटी पर जिला स्तरीय मुख्य कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जहाँ संध्या 7: बजे से सामूहिक दीप प्रज्जवलन होगा। कलेक्टर कुलदीप शर्मा,एसपी गौरव राय एवं नगर पालिका अध्यक्ष अशोक जैन ने बुधवार को चौपाटी मे आशीर्वाद का दीया कार्यक्रम की तैयारी का जायजा लिया।उन्होंने उपस्थित अधिकारियो को दीप प्रज्वलन हेतु समय पर सभी आवश्यक तैयारी,पार्किंग,फायर ब्रिगेड,एम्बुलेंस आदि की तैनाती सीनिश्चि करने के निर्देश दिए।

चौपाटी मे आयोजित होने वाले जिला स्तरीय कार्यक्रम मे दीप प्रज्जवलन हेतु जलाशय के फुटपाथ मे 20 सेक्टर बनाए गए है जिसे अलग - अलग विभागों को दीप प्रज्जवलित करने हेतु आवंटित किया गया है। चौपाटी मे अपरान्ह 4 बजे से आर्केस्ट्रा टीम द्वारा संगीतमय भजन की प्रस्तुति होगी। मुख्य अतिथि के आगमन पश्चात संध्या 7 बजे एक साथ सवा लाख दीप प्रज्जवलित किये जायेंगे एवं विकसित भारत 2047 का सामूहिक संकल्प लिया जाएगा।

सांसद संतोष पाण्डेय ने सेवा संकल्प अभियान में शामिल होने की अपील

कवर्धा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 25 वर्षों की जनसेवा एवं समर्पण के अवसर पर कबीरधाम जिले में आयोजित सेवा संकल्प अभियान के लिए सांसद श्री संतोष पाण्डेय सहित जिले के जनप्रतिनिधियों ने जिलेवासियों से सहभागिता की अपील की है। जनप्रतिनिधियों ने जिलेवासियों से 17 सितंबर को शाम 7 बजे 'आशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में सहभागी बनने तथा अपने-अपने घरों में दीप प्रज्वलित कर सेवा, समर्पण और विकसित भारत-2047 के सामूहिक संकल्प से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हर घर का दीप सेवा और संकल्प का संदेश देगा। सभी नागरिक परिवार सहित इस अभियान में सहभागी बनें और 'आशीर्वाद का दीया' को जनभागीदारी का उत्सव बनाएं।

दीपों से जगमगाएगा दुर्ग आशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम आज

■ सेवा संकल्प अभियान के तहत नगर निगम मुख्यालय सहित चार प्रमुख स्थानों पर होगा दीप प्रज्वलन

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम। राज्य शासन द्वारा 17 सितंबर से 17 अक्टूबर 2026 तक सेवा संकल्प अभियान का आयोजन किया जा रहा है। अभियान का उद्देश्य राज्य शासन की 25 वर्षों की जनसेवा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना, विकसित भारत 2047 के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाना तथा शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों के संबंध में व्यापक जनभागीदारी सुनिश्चित करना है। राज्य शासन के निर्देशानुसार महापौर अलका बाघमार के निर्देश तथा आयुक्त लीना कोसम के मार्गदर्शन में नगर पालिक निगम दुर्ग द्वारा 17 सितंबर को आशीर्वाद का दीया कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम के अंतर्गत संध्या 6 बजे 51 हजार दीपों का प्रज्वलन किया जाएगा। निगम मुख्यालय, डाटा सेंटर, हिन्दी भवन एवं अटल परिसर सहित नगर निगम के विभिन्न वार्डों में भी दीप प्रज्वलित किए जाएंगे।

कार्यक्रम के सफ्ल एवं सुचारू क्रियान्वयन के लिए प्रभारी राजस्व अधिकारी आर.के. बोरकर को नोडल अधिकारी का दायित्व सौंपा गया है। वहीं प्रमुख स्थानों पर दीप प्रज्वलन की व्यवस्था के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जिम्मेदारियां निर्धारित की गई हैं।

निगम मुख्यालय: कार्यपालन अभियंता मोहम्मद सलीम सिद्दीकी एवं उप अभियंता, विकास दमाहे को 10 हजार दीप प्रज्वलन की व्यवस्था का दायित्व सौंपा गया है।

डाटा सेंटर: कार्यपालन अभियंता सुश्री विनीता वर्मा एवं सहायक अभियंता हरिशंकर साहू 10 हजार दीप प्रज्वलन की व्यवस्था संभालेंगे।

हिन्दी भवन: सहायक अभियंता गिरीश दीवान एवं सहायक अभियंता सुरेश केवलानी को 10 हजार दीप प्रज्वलन की व्यवस्था की जिम्मेदारी दी गई है।

विश्व ओजोन दिवस पर महाविद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय, बलौदाबाजार में विश्व ओजोन दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों में पर्यावरण एवं ओजोन परत के संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय की छात्राओं ने पोस्टर निर्माण एवं भाषण कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने अपने पोस्टरों एवं भाषणों के माध्यम से ओजोन परत के महत्व, ओजोन क्षरण के कारणों, इसके दुष्प्रभावों तथा ओजोन परत के संरक्षण के उपायों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को बताया गया कि ओजोन परत पृथ्वी के वायुमंडल के समताप मंडल में स्थित एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच है, जो सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी (UV) विकिरणों के एक बड़े हिस्से को अवशोषित करती है। ओजोन क्षरण से पृथ्वी पर UV विकिरण का प्रभाव बढ़ सकता है, जिसका मानव स्वास्थ्य, वनस्पतियों, जीव-जंतुओं तथा पारिस्थितिक तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

इस अवसर पर मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के संबंध में भी विद्यार्थियों को जानकारी दी गई तथा ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के उपयोग को नियंत्रित करने और पर्यावरण संरक्षण में अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

छोटे कारोबारियों को मिलेगा बड़ा सहारा, कवर्धा में आज लगेगा पीएम स्वनिधि लोन मेला

कवर्धा (विश्व परिवार)। नगर पालिका परिषद कवर्धा द्वारा प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के तहत पथ विक्रेताओं, रेहड़ी-ठेला संचालकों, फेरीवालों एवं अन्य स्ट्रीट वेंडर्स को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से कल दिनांक 17 सितंबर 2026, गुरुवार को लोन मेले का आयोजन नगर पालिका परिषद कवर्धा के सभाकक्ष में किया जा रहा है। लोन मेला नगर पालिका परिषद सभा कक्ष में सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजित किया जायेगा। मेले में पात्र हितग्राहियों को योजना की जानकारी देने के साथ ऋण आवेदन, दस्तावेजों की जांच, बैंक संबंधी मार्गदर्शन तथा ऋण प्रक्रिया में आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जाएगा।

15 हजार से 50 हजार तक मिलेगा ऋण

पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत छोटे कारोबारियों को चरणबद्ध तरीके से ऋण उपलब्ध कराया जाता है। संशोधित ऋण व्यवस्था के अनुसार प्रथम ऋण 15,000 तक, द्वितीय ऋण 25,000 तक तथा तृतीय ऋण 50,000 तक प्राप्त किया जा सकता है। योजना की प्रमुख विशेषता यह है कि पात्र हितग्राहियों को बिना किसी संपत्ति को गिरवी रखे और बिना गारंटी के ऋण सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। इससे छोटे व्यापारियों को अपने व्यवसाय में पूंजी लगाने और कारोबार को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है।

समय पर भुगतान पर ब्याज सब्सिडी और डिजिटल प्रोत्साहन

योजना के तहत ऋण का समय पर भुगतान करने वाले हितग्राहियों को ब्याज सब्सिडी का लाभ दिया जाता है। साथ ही डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल भुगतान और कैशलेस लेन-देन से जुड़े प्रोत्साहन का प्रावधान है। लोन मेले में हितग्राहियों को डिजिटल लेन-देन, यूपीआई, क्यूआर कोड तथा वित्तीय साक्षरता के संबंध में भी जानकारी दी जाएगी।

UPI लिंक्ड क्रेडिट कार्ड की सुविधा भी

पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत UPI लिंक्ड क्रेडिट कार्ड सुविधा भी लोन मेले में आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहेगी। छोटे व्यापारियों को डिजिटल भुगतान और दैनिक व्यावसायिक जरूरतों के लिए इस सुविधा की जानकारी दी जाएगी। इससे कारोबारियों को डिजिटल वित्तीय व्यवस्था से जोड़ने के साथ सुरक्षित एवं सुविधाजनक लेन-देन को बढ़ावा मिलेगा।

लोन मेले में बैंक अधिकारियों एवं नगर पालिका की टीम द्वारा पात्र पथ विक्रेताओं को ऋण से संबंधित आवश्यक जानकारी दी जाएगी। हितग्राहियों के आवेदन, दस्तावेजों की जांच, ऋण संबंधी प्रक्रिया तथा योजना के अन्य लाभों के संबंध में मौके पर मार्गदर्शन किया जाएगा।

भैयाथान क्षेत्र में 34 करोड़ से अधिक के सड़क विकास कार्यों की राजवाड़े ने दी सौगात

■ बेहतर सड़कें ग्रामीण विकास की मजबूत नींव, गुणवत्तापूर्ण निर्माण से बढ़ेंगे विकास के अवसर : लक्ष्मी राजवाड़े

रायपुर (विश्व परिवार)। महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने भैयाथान क्षेत्रवासियों को सड़क विकास की बड़ी सौगात देते हुए 34 करोड़ 15 लाख रुपये से अधिक की लागत वाले दो महत्वपूर्ण सड़क निर्माण एवं उन्नयन कार्यों का कार्यारम्भ पूजन किया। इन परियोजनाओं के पूर्ण होने से ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन सुगम होने के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, बाजार और अन्य आवश्यक सेवाओं तक लोगों की पहुंच बेहतर होगी तथा क्षेत्र में विकास की गति को नई दिशा मिलेगी।

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि सड़कें विकास की जीवन रेखा हैं। मजबूत और बेहतर सड़क नेटवर्क से गांवों की कनेक्टिविटी बढ़ती है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है। सरकार का प्रयास है कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण अधोसंरचना पहुंचे और लोगों को आवागमन की बेहतर सुविधाएं मिलें। उन्होंने कहा कि इन सड़क परियोजनाओं का लाभ किसानों, विद्यार्थियों, व्यापारियों सहित आम नागरिकों को मिलेगा।

उन्होंने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों और निर्माण एजेंसियों को निर्देश दिए कि सभी कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं। निर्माण कार्यों में गुणवत्ता के मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करते हुए उन्होंने कहा कि मजबूत और टिकाऊ अधोसंरचना ही विकास कार्यों का स्थायी लाभ लोगों तक पहुंचा सकती है।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 17 सितम्बर 2026

सेवा संकल्प अभियान के तहत आज रक्तदान शिविर का आयोजन

सारंगढ़-बिलाईगढ़। सेवा संकल्प अभियान के तहत जिले में 17 सितंबर को विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में यह शिविर जिला चिकित्सालय सारंगढ़, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिलाईगढ़ और बरमकेला में सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक लगेगा।कलेक्टर पद्मिनी भोई साहू के निर्देश और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पुष्पेंद्र वैष्णव के मार्गदर्शन में शिविर को लेकर स्वास्थ्य विभाग ने तैयारियां पूरी कर ली हैं। अभियान का उद्देश्य आपातकालीन परिस्थितियों और गंभीर मरीजों के लिए पर्याप्त रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

प्रधानमंत्री मोदी के 25 वर्षों के जनसेवा संकल्प के उपलक्ष्य में भाजयुमो की बाइक रैली रवाना

■ मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना, प्रधानमंत्री के जन्मस्थल 'वडनगर' और कर्मस्थल 'काशी (वाराणसी)' को जोड़ेगी बाइक यात्रा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने मंगलवार को यहाँ कुशाभाऊ ठाकरे परिसर स्थित भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय में भारतीय जनता युवा मोर्चा की बाइक यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह यात्रा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जनसेवा संकल्प के 25 वर्ष पूर्ण होने पर आगामी 17 सितम्बर से शुरू हो रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत वड़नगर से काशी तक जाएगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस मौके पर मीडिया से बातचीत करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगामी 17 सितंबर को जन्मदिन और उनके सार्वजनिक जीवन में जनसेवा के 25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी साझा की। श्री साय ने बताया कि हर साल 17 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर (गांधी जयंती) तक 'सेवा पखवाड़ा' मनाया जाता है। इस वर्ष नरेंद्र मोदी के गुजरात के मुख्यमंत्री से लेकर देश के प्रधानमंत्री तक के 25 वर्षों के शानदार जनसेवा कार्यकाल पूरा होने के उपलक्ष्य में पूरे देश में 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत 12-13 प्रमुख कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। श्री साय ने बताया कि प्रधानमंत्री के जन्मस्थल 'वडनगर' और कर्मस्थल 'काशी (वाराणसी)' को जोड़ने वाली एक प्रेरक बाइक यात्रा के लिए छत्तीसगढ़ से 60 युवाओं के दल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया है। 17 सितंबर को काशी में 10 पवित्र नदियों के जल से बाबा विश्वनाथ का जलाभिषेक किया जाएगा। यह यात्रा 17 सितंबर से 7 अक्टूबर तक कुल 20 दिनों तक निरंतर चलेगी और अंत में वडनगर पहुँचेगी। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य प्रधानमंत्री के सेवा संकल्प और राष्ट्र निर्माण के कार्यों को जन-जन तक पहुँचाना है।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री द्वय अरुण साव, विजय शर्मा, कैबिनेट मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, प्रदेश महामंत्री यशवंत जैन, अखिलेश सोनी, डॉ. नवीन मार्कंडेय, प्रदेश कोषाध्यक्ष राम गर्ग, प्रदेश कार्यालय मंत्री अशोक बजाज, श्रम आयोग अध्यक्ष रामप्रताप सिंह सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी एवं युवा मोर्चा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

रावतपुरा कालोनी फेस 2 में अवैध निर्माणों को हटाने की कार्रवाई

■ बिल्डरों ने आगे निर्माण नहीं करवाने की बात कही

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम रायपुर के आयुक्त संबित मिश्रा के निर्देश पर नगर निगम जोन 6 जोन कमिश्नर श्री हितेन्द्र यादव के मार्गदर्शन एवं कार्यपालन अभियंता दिनेश सिन्हा सहित अन्य सबधित नगर निगम अधिकारियों एवं पुलिस प्रशासन बल की उपस्थिति में रायपुर नगर निगम जोन 6 क्षेत्र अंतर्गत रावतपुरा कालोनी फेस 2 क्षेत्र में ले आउट के बाहर निर्मित लगभग 40 अवैध निर्माणो को हटाने की अभियान पूर्वक कार्रवाई की गई। बिल्डरो ने इसमें ले आउट के बाहर अवैध निर्माण करवा रखा था। अब संबंधित बिल्डरो ने नगर निगम रायपुर से कहा है कि आगे निर्माण इसमे नहीं किया जायेगा। जोन 6 जोन कमिश्नर हितेन्द्र यादव ने जानकारी दी है कि बिल्डर मुनरपे, रहमत, ओग, धनु सोनकर, मनोज चकधारी, रवि त्रिपाठी, आशु त्रिपाठी, अनवर, चेतन देवांगन, सुभाष विश्वकर्मा, सुखराम चकधारी, अजय साहू जय साहू अजय माखिजा, बसंत सतवाने, तिस्थ साहू, गोपाल देवांगन द्वारा रावतपुरा कालोनी फेस 2 में लगभग 40 निर्माण ले आउट के बाहर क्षेत्र में बिना अनुमति अवैध रूप से करवाने की जानकारी मिलने पर नियमानुसार नोटिस देकर अभियान चलाकर अवैध निर्माण हटाने की कार्रवाई नगर निगम जोन 6 क्षेत्र में निर्देशानुसार की गई।

भुवनेश्वर एवं उत्तराखंड से आए मीडिया प्रतिनिधियों ने किया एसईसीएल का दौरा

■ खनन कार्यों, ऊर्जा सुरक्षा एवं सतत विकास पहलों की ली प्रत्यक्ष जानकारी

बिलासपुर (विश्व परिवार)। भुवनेश्वर एवं उत्तराखंड से आए पत्रकारों एवं मीडिया प्रतिनिधियों के एक दल ने साऊथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) का दौरा कर कंपनी के खनन कार्यों, देश की ऊर्जा सुरक्षा में योगदान तथा सतत एवं जिम्मेदार खनन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की प्रत्यक्ष जानकारी ली।

यह मीडिया दौरा भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के पत्र सूचना कार्यालय (पीआईबी), रायपुर, भुवनेश्वर एवं उत्तराखंड के सहयोग से आयोजित किया गया। एसईसीएल मुख्यालय, बिलासपुर में आयोजित संवाद कार्यक्रम के दौरान मीडिया प्रतिनिधियों को एसईसीएल के परिचालन एवं देश की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति में कंपनी की भूमिका के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण, खान सुरक्षा, तकनीकी नवाचार, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर), समुदाय एवं कर्मचारी कल्याण, विविधीकरण तथा महिला सशक्तिकरण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। संवाद कार्यक्रम में श्री बिरंची दास, निदेशक (मानव संसाधन); श्री रमेश चंद्र महापात्र, निदेशक (तकनीकी-संचालन); तथा नृपेंद्र नाथ, निदेशक (तकनीकी- योजना एवं परियोजना), अति. प्र., एसईसीएल सहित कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। एसईसीएल प्रबंधन ने दोहराया कि कंपनी देश की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रतिबद्ध है तथा इसके साथ ही समुदायों के कल्याण और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी का भी पूरी गंभीरता से निर्वहन कर रही है।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को भारत सरकार द्वारा प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त

रायपुर (विश्व परिवार)। सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को राजभाषा हिंदी के प्रभावी एवं उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2025-26 का प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 14 एवं 15 सितंबर 2026 को वासी, नवी मुंबई स्थित सिडको एग्ज़िबिशन सेन्टर में आयोजित छठे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिंदी दिवस समारोह 2026 के दौरान प्रदान किया गया। समारोह में देशभर से विभिन्न मंत्रालयों, विभागों एवं संस्थानों के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की, देवेन्द्र फड़नवीस, मुख्यमंत्री महाराष्ट्र एवं सुनेत्रा पवार, उप मुख्यमंत्री उपस्थित रहें।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के करकमलों से सेन्ट्रल बैंक ऑफइंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी कल्याण कुमार ने यह गौरवपूर्ण पुरस्कार प्राप्त किया। साथ ही इस सम्मेलन में कार्यकारी निदेशक महेन्द्र दोहरे एवं मुख्य महाप्रबंधक, मासंप्र एव राजभाषा कुशल पाल उपस्थित रहें।

यह सम्मान बैंक द्वारा राजभाषा नीति के प्रभावी अनुपालन, कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग, हिंदी में रचनात्मक एवं अभिनव कार्यों तथा बैंक के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा के प्रति सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों की राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त मान्यता है।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का राजभाषा के प्रति समर्पण केवल कार्यालयीन कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि बैंक द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार, कर्मचारियों की हिंदी में कार्य करने की क्षमता को प्रोत्साहित करने तथा बैंकिंग सेवाओं को अधिक सहज एवं ग्राहकोन्मुख बनाने के लिए विभिन्न पहल की जाती रही हैं। बैंक की द्विभाषीय गृह पत्रिका 'सेन्ट्रलाइट' भी हिंदी एवं अंग्रेजी के माध्यम से बैंक की गतिविधियों, उपलब्धियों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को मंच प्रदान करती है।

छोटे नक्सलियों को फांसी की सजा हुई बड़े षड्यंत्र कारी सरकार की गोंद में बैठ कर बच गए: बैज

■ झीरम का फैसला आधा अधूरा न्याय हम अपनी राय पर कायम : कांग्रेस

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि झीरम हत्याकांड में एनआईए कोर्ट का फैसला आया है, 10 दोषी पाए गए आरोपियों को फांसी की सजा कोर्ट ने दिया है। यह आधा अधूरा न्याय है। हम अदालत के फैसले का आदर करते है। अदालत ने उन्हीं को सजा दिया है जिनके खिलाफ सबूत उसके सामने रखे गए। एनआईए घटना के षड्यंत्र कारियों तक तो पहुंच ही नहीं पाई उसकी जांच शुरू से दिशाहीन रही है।उसने बड़े नक्सलियों से कोई पूछताछ ही नहीं किया वो तो सरकार को समर्पण नीति का फायदा उठा के खुले घूम रहे सरकार भी उनको सजा दिलाने के बजाय संरक्षक बन गई है। झोला उठाने वाले, पानी वाले गड्ढा खोदने वाले, रास्ता बताने वाले नक्सलियों को एनआईए ने आरोपी बनाया, उनको सजा मिली।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा किएनआईए ने घटना के राजनैतिक षड्यंत्रों के पहलू की जांच नहीं किया था। जिन 10 लोगों की एनआईए ने गिरफ्तारी किया था और जिनको दोषी पाया गया है उनको फांसी की सजा दी गई है वे छोटे नक्सली है। इतनी बड़ी घटना बिना बड़े नक्सली नेताओं के संभव नहीं था। एनआईए ने बड़े नक्सली नेताओं का नाम शुरू के एफ्आईआर में शामिल किया था बाद में उसको हटा दिया। एनआईए ने माना था घटना में 200 नक्सली शामिल थे, 39 नामजद थे तो आरोप सिद्ध और सजा 10 पर ही क्यों?

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि बड़ा सवाल यह है कि इस फैसले से घटना के साजिश का पर्दाफाश नहीं हुआ है।

सहकारिता की ताकत से राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ रच रहा कीर्तिमान : केदार कश्यप

■ भोरमदेव सहकारी शक्कर कारखाने को लगातार दो पेराई सत्रों के लिए राष्ट्रीय सम्मान, सहकारिता मंत्री ने दी बधाई

रायपुर (विश्व परिवार)। सहकारिता मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में सहकारिता किसानों की समृद्धि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की बड़ी ताकत बन रही है। प्रदेश की सहकारी संस्थाएं बेहतर प्रबंधन, पारदर्शिता और आधुनिक तकनीक के माध्यम से अब राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान स्थापित कर रही हैं। भोरमदेव सहकारी शक्कर कारखाना, कवर्धा की उपलब्धि इसी बदलते और मजबूत होते सहकारिता क्षेत्र का उदाहरण है।

भोरमदेव सहकारी शक्कर कारखाना, कवर्धा का पेराई सत्र 2024-25 एवं 2025-26 में सर्वोच्च शुगर रिकवरी के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए नेशनल को-ऑपरेटिव शुगर फेडरेशन के प्रतिष्ठित हाइएस्ट शुगर रिकवरी एफिशिएंसी अवार्ड के लिए चयन किया गया है। लगातार दो पेराई सत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मिली यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ के सहकारिता क्षेत्र के लिए गौरव का विषय है।

इस उपलब्धि के संदर्भ में भोरमदेव सहकारी शक्कर कारखाने के प्रबंध संचालक गौरी शंकर शर्मा ने सहकारिता मंत्री केदार कश्यप से भेंट की। मंत्री कश्यप ने उन्हें, कारखाना प्रबंधन, कर्मचारियों और इससे जुड़े गन्ना उत्पादक किसानों को इस उपलब्धि के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

सहकारिता मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि यह सम्मान हमारे किसानों की मेहनत और सहकारी व्यवस्था की सामूहिक शक्ति का सम्मान है। किसानों द्वारा गुणवत्तापूर्ण गन्ने का उत्पादन, कारखाने की तकनीकी दक्षता और बेहतर प्रबंधन ने छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश की सहकारी संस्थाएं आधुनिक, पारदर्शी, जवाबदेह और किसान हितैषी बनें तथा उनका सीधा लाभ किसानों तक पहुंचे।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सहकारी संस्थाओं को केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रखकर उन्हें ग्रामीण विकास और किसान सशक्तिकरण का मजबूत माध्यम बनाने की दिशा में काम कर रही है।

बैज की वाचालता मानसिक दिवालिएपन का प्रमाण: विधायक रंजना साहू

■ प्रदेश उपाध्यक्ष रंजना साहू का करारा हमला : मोदी जी के जन्मदिन पर अनर्गल प्रलाप करने से पहले बैज गांधी-नेहरू खानदान के कारनामों का हिसाब दें

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक रंजना साहू ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज के बयान पर तीखा प्रहार करते हुए इसे उनकी राजनीतिक हताशा और अनर्गल वाचालता करार दिया है।

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती साहू ने कहा कि विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस को भाजपा हमेशा जनसेवा, रक्तदान, स्वच्छता और जनकल्याणकारी कार्यों के जरिए 'सेवा पखवाड़ा' के रूप में मनाती है। लेकिन जिन दलों की संस्कृति केवल एक परिवार की परिक्रमा और भ्रष्टाचार पर टिकी हो, उन्हें जनसेवा का यह भाव कभी समझ नहीं आ सकता।

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष साहू ने बैज को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के जन्मदिवस का नामकरण करने की हास्यास्पद कोशिश करने से पहले बैज यह स्पष्ट करें कि वे अपने आकाओं का जन्मदिन किन नामों से मनाना पसंद करेंगे। पं. जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन : देश की सीमाओं से समझौता करने, अक्साई चिन गँवाने और कश्मीर समस्या देश पर थोपने के नाम पर मनाया जाए? इंदिरा गांधी का जन्मदिन : देश पर क्रूर 'आपातकाल' थोपने, लोकतंत्र की हत्या करने और नागरिक अधिकारों को कुचलने के 'तानाशाही दिवस' के रूप में मनाएंगे? राजीव गांधी का जन्मदिन: सिखों के नरसंहार, भोपाल गैस त्रासदी के मुख्य आरोपी को भगाने और ऐतिहासिक 'बोफोर्स दलाली दिवस' के रूप में मनाना चाहेंगे?

कलिंगा विवि ने सेवा भावना को बढ़ावा देने के लिए रक्तदान शिविर का आयोजन किया

नवा रायपुर (विश्व परिवार)। कलिंगा विश्वविद्यालय ने 10 सितंबर 2026 को श्री रावतपुरा सरकार इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च (SRIMSR) ब्लड सेंटर के सहयोग से एक सफल रक्तदान शिविर का आयोजन किया। छात्र कल्याण अधिष्ठाता (डीन) और उनकी टीम के नेतृत्व में आयोजित इस पहल ने छात्रों और कर्मचारियों को स्वेच्छा से रक्तदान करने और पूरे परिसर में सामाजिक जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक साथ लाया।

कुलपति डॉ. आर. श्रीधर ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया और आयोजकों को अपनी सराहना और शुभकामनाएं दीं। यह आयोजन सामाजिक महत्व के कार्यों में सक्रिय रूप से योगदान देने के लिए छात्रों और कर्मचारियों के अवसर पैदा करने की विश्वविद्यालय की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस रक्तदान शिविर को विश्वविद्यालय समुदाय से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली, जिसमें लगभग 170 प्रतिभागियों ने इस पहल के लिए पंजीकरण कराया। आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा जांच के बाद, 136 योग्य दाताओं ने सफलतापूर्वक रक्तदान किया, जिससे रक्त आधान की आवश्यकता वाले व्यक्तियों और मरीजों की सहायता में एक सार्थक योगदान मिला।

SRIMSR ब्लड सेंटर के डॉक्टरों की टीम ने पूरी रक्तदान प्रक्रिया की देखरेख की और यह सुनिश्चित किया कि सभी आवश्यक चिकित्सा और स्वच्छता प्रोटोकॉल का पालन किया जाए। आभार व्यक्त करने के उद्देश्य से, सभी प्रतिभागियों को रक्तदान के बाद जलपान और एक-एक उपहार दिया गया, जिसमें हेलमेट, ईयरफॉड्स या टिफिन बॉक्स शामिल थे।

एनएसएस (NSS) के छात्र स्वयंसेवकों ने पंजीकरण में सहायता करके, प्रतिभागियों के साथ समन्वय बनाकर, दाताओं की सुगम आवाजाही को सुगम बनाकर और मेडिकल टीम को सहायता प्रदान करके पूरे कार्यक्रम के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे शिविर के सुचारू और सफल संचालन में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

एकत्र किए गए रक्त की संख्या से परे, इस पहल ने स्वैच्छिक रक्तदान के महत्व और जीवन बचाने की इसकी क्षमता के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य किया।

एनएमडीसी, बस्तर के धावक फुलधर नेताम की सहायता करेगा

■ बोस्टन मैराथन के लिए उन्हें एक बेहतरीन एथलीट के रूप में विकसित करने का लक्ष्य

रायपुर (विश्व परिवार)। एनएमडीसी बस्तर के धावक फुलधर नेताम की व्यापक सहायता करने के लिए तैयार है, जो एनएमडीसी हैदराबाद मैराथन की ओपन श्रेणी में विजेता के रूप में उभरे हैं, जिसका उद्देश्य उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में आगामी बोस्टन मैराथन में प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम एक बेहतरीन एथलीट के रूप में विकसित करना है ।

छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले के रहने वाले पुलिस कर्मी फूलधर नेतम ने मैराथन में 2 घंटे और 45 मिनट का समय लिया । एनएमडीसी के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक अमिताभ मुखर्जी ने उनकी उपलब्धि के लिए उन्हें सम्मानित किया और रू.5 लाख का चेक सौंपा।

एनएमडीसी के निदेशक (कार्मिक) कृष्ण कुमार ठाकुर ने कहा कि कंपनी नेताम की सहायता के लिए संरचित कोचिंग, वैज्ञानिक प्रशिक्षण, व्यावसायिक सुविधाओं की उपलब्धता और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भागीदारी सहित सभी संभावित मार्गों की तलाश करेगी।

श्री ठाकुर ने कहा कि एनएमडीसी उचित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए भारत और विदेशों में संरचित प्रशिक्षण सुविधाओं सहित उनकी सहायता के लिए सभी संभावित मार्गों की तलाश करेगा । इसका उद्देश्य उन्हें उनकी पूरी क्षमता को विकसित करने और उन्हें प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिए तैयार करने में मदद करना है।

अभी मुख्य फोकस नेताम को बोस्टन मैराथन में प्रतिस्पर्धा के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और अनुभव दिलाने में है, जो दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित लंबी दूरी की दौड़ में से एक है। एनएमडीसी और हैदराबाद रनर्स सोसाइटी भी इस ईवेंट में उनकी एंट्री सुनिश्चित करने में मदद करने की संभावनाएं तलाश रहे हैं ।

नेतम बस्तर और दंतेवाड़ा के लगभग 170 धावकों में से एक हैं, जिन्हें इस वर्ष हैदराबाद मैराथन में भाग लेने के लिए एनएमडीसी द्वारा प्रायोजित किया गया था। इस क्षेत्र से धावकों की पहचान की गई और उन्हें प्रारंभिक प्रशिक्षण, यात्रा, आवास, दौड़ने के लिए किट और अन्य लॉजीस्टिक सहायता प्रदान की गई ।

नेताम के लिए तो शुरुआती लाइन तक पहुंचना भी अनिश्चित था ।

मैंने तो यह भी नहीं सोचा था कि मुझे एंट्री मिलेगी या नहीं । मेरे दोस्त पाण्ड्रू और बसंत सर ने मुझे हैदराबाद में एंट्री पाने में मदद की । एनएमडीसी ने जूते, किट और आवास सहित शुरू से अंत तक सब कुछ मुहैया कराया नेताम ने कहा ।

यह पहल बस्तर से खेल प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें विकसित करने के लिए एनएमडीसी के प्रयास का हिस्सा है । यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां एथलेटिक्स के लिए संगठित बुनियादी ढांचे और पेशेवर कोचिंग तक पहुंच पारंपरिक रूप से सीमित रही है ।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354